Delhi Postal Regd. No. DL(C)-01/1272/2024, R.N.I. No. 720 14/99 Posted at LPC Delhi RMS, Delhi-6 Monday & Tuesday

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स

संघीय समाचारों का साप्ताहिक मुखपत्र

terapanthtimes.com

> व्यक्ति पुण्योदय के दिनों में भी प्रमाद में न जाए, जागरूक रहे, सत्ता, संपत्ति आदि का दुरुपयोग न करे।
> - आचार्य श्री भिक्षु

नई दिल्ली • वर्ष 25 • अंक 18 • 05 फरवरी-11 फरवरी, 2024 • प्रत्येक सोमवार • प्रकाशन तिथि : 03-02-2024 • पेज 12 • ₹10 रुपये

शांति, क्षमा, सेवा और अनासक्ति में वर्धमान बनें : आचार्यश्री महाश्रमण

■ वर्धमान महोत्सव पर वर्धमान प्रतिनिधि ने दिया वर्धमानता का आशीर्वाद

डोंबीवली, मुम्बई।
28 जनवरी, 2024

त्रिदिवसीय वर्धमान महोत्सव व डोंबीवली प्रवास के अंतिम दिन तेरापंथ धर्मसंघ के दैदीप्यमान नक्षत्र आचार्यश्री महाश्रमण जी ने धर्मसंघ को वर्धमानता के लिए पावन प्रेरणा प्रदान करते हुए फरमाया कि अपने जीवन में हम अच्छे संदर्भों में वर्धमान रहें, यह हमारी मनोभिलाषा रहनी चाहिए। गृहस्थों के लिए भी वर्धमान रहने की बात होती है, साधु जगत और समणियों के लिए भी वर्धमानता की बात है।

गृहस्थों में भौतिक वर्धमानता की अभिलाषा होती है, वह आवश्यक भी हो सकती है, परंतु उन्हें आध्यात्मिक वर्धमानता की अकांक्षा भी रखनी चाहिए। श्रावक-श्राविकाएं भी तीर्थ चतुष्टय के अंग हैं, उनकी भी धार्मिक आराधना में वर्धमानता होती रहनी चाहिए। टाइम मैनेजमेंट भी वर्धमानता में सहायक तत्त्व बन सकता है। समय नियमितता जीवन में रहनी चाहिए। दिनचर्या अच्छी होगी तो कार्य भी अच्छा होगा।

दो प्रकार के कार्य होते हैं, एक व्यक्तिगत, दूसरा सामूहिक। सामूहिक कार्य में समय की नियमितता रहे। आगमों में सूत्र आते हैं 'काले कालं समायरे' समय पर काम करो, 'खणं जाणाहि पंडिए'- क्षण को, अवसर को पहचानो, ये समय नियोजन की प्रेरणा देते हैं। समय पर काम करें, अवसर को पहचानें और उसका लाभ उठाने का प्रयास करें। यह हमारी जागरूकता का प्रमाण बन सकता है।

हमें जीवन में वर्धमान होना है, हम कषायमंदता की ओर आगे बढ़ें। हमारे क्रोध, मान, माया और लोभ पतले पड़ें। हम क्षमा में वर्धमान बनें। जीवन में सहिष्णुता और धैर्य होना चाहिए। तकलीफ आ सकती है, पर झटपट अधीर नहीं बनना चाहिए। शारीरिक प्रतिकूलता को भी सहन करना चाहिए। मानसिक दृष्टि से भी सहिष्णुता रहे। अपनी आलोचना, निंदा का जवाब हम अपने अच्छे कार्यों से दें। (शेष पृष्ठ 3 पर)

> आगमों में सूत्र आते हैं 'काले कालं समायरे' समय पर काम करो, 'खणं जाणाहि पंडिए'- क्षण को, अवसर को पहचानो, ये समय नियोजन की प्रेरणा देते हैं।
> -आचार्यश्री महाश्रमण

त्रिदिवसीय वर्धमान महोत्सव

1. जीवन में सहिष्णुता और धैर्य होना चाहिये।
2. अपनी आलोचना –निन्दा का जबाब हम अपने अच्छे कार्यों से दें।
3. धार्मिक वर्धमानता की दिशा में बढ़ने का प्रयास करें।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
5-11 फरवरी, 2024

✦ अतीत अनंत है, अनागत भी अनंत है, किंतु वर्तमान बहुत ही छोटा समय होता है। छोटा होने पर भी वर्तमान किसी दृष्टि से ज्यादा उपयोगी होता है।
आचार्य श्री महाश्रमण

पूज्यप्रवर ने सम्यक् दर्शन, सम्यक् चारित्र की निर्मलता की दी प्रेरणा

प्रण के लिए प्राणों को भी छोड़ दें : आचार्यश्री महाश्रमण

डोंबीवली, २७ जनवरी, २०२४

वर्धमान महोत्सव के दूसरे दिन वर्तमान के वर्धमान आचार्यश्री महाश्रमण जी ने वर्धमानता की प्रेरणा प्रदान करते हुए फरमाया कि **नाणेणं दंसणेणं च, चरित्तेण तहेव य। खंतीए, मुत्तीए, वड्ढमानो भवाहि य।।** यह श्लोक वर्धमानता की प्रेरणा देने वाला हो सकता है। वर्धमान महोत्सव का एक आधार-भूत श्लोक, एक ध्येय सूत्र वाला श्लोक संभवतः इसे माना जा सकता है।

ज्ञान के क्षेत्र में हमें वर्धमान रहना चाहिए। ज्ञान के लिए प्रतिभा भी अपेक्षित होती है। प्रतिभा एक प्रकार की शक्ति है, लब्धि है, उसका उपयोग ज्ञानार्जन में करें। सम्यक् ज्ञान, दर्शन, चारित्र और तप मोक्ष मार्ग है। दर्शन का अपना महत्त्व है। जिस कार्य के प्रति एक निष्ठा सघन हो जाती है, आकर्षण गहरा हो जाता है, आस्था पुष्ट हो जाती है, श्रद्धा समीचीन हो जाती है, फिर उस कार्य को करना आसान हो सकता है।

ज्ञान से हमने जान लिया पर जब तक श्रद्धा न हो जाए तब तक वह जीवन में कितना आ सकता है? सम्यक् आचार के लिए दर्शन बहुत जरूरी है। हमारी आस्था आत्मा के प्रति है कि आत्मा का कल्याण करना है। 'मर पूरा देस्यां, आत्मा रा कारज सारसां'–भले मृत्यु को प्राप्त हो जाएँ, पर आत्मसाधना करेंगे, आत्मा का प्रयोजन सिद्ध करेंगे। आस्था है तो प्रण के लिए आदमी प्राणों को छोड़ दे। आस्था नहीं है तो प्रण भी छूट सकता है।

सम्यक् दर्शन निर्मल रहे। वही सत्य है, वह सत्य ही है, जो जिनेश्वरों ने प्रवेदित किया है–यह सम्यक् दर्शन का एक सूत्र है। सम्यक्त्व के लिए कषायमंदता की साधना बनी रहे, गुस्सा, अहंकार, माया, लोभ ये प्रतनु हो जाएँ। तत्त्व को समझने का प्रयास करें। तत्त्व को अनाग्रह भाव से ग्रहण करने का प्रयास हो तो सम्यक् दर्शन मजबूती को प्राप्त हो सकता है। दर्शन श्रद्धा का एक फलित आचार की निर्मलता हो सकती है। चारित्र की सीधी सी परिभाषा है कि समभाव चारित्र है। चारित्र के मूल में समता है, उससे अहिंसा, सत्य, अचौर्य, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह ये शाखाएँ निकलती हैं, यह पंचशाखी चारित्र वृक्ष है। चारित्रात्माएँ चारित्र की निर्मलता का प्रयास रखें।

प्रतिक्रमण और प्रायश्चित वर्तमान में दो उपाय हैं, जिनसे चारित्र की निर्मलता रह सकती है। प्रतिक्रमण और प्रायश्चित समय पर हो जाए। चउवीसत्थव भी एक प्रकार का प्रायश्चित प्रतिलेखन यथाविधि होता है नहीं, उपकरण बिना प्रतिलेखन नहीं रह जाए, उसके प्रति जागरूकता रहनी चाहिए। ईर्या समिति में भी जागरूक रहे, ईर्या समिति में भी जागरूक रहें, जीवों के प्रति दया, अहिंसा की भावना रहे। ईर्या समिति बहुत अच्छी साधना है, भाव क्रिया युक्त, ईर्या समिति युक्त चलने का प्रयास करें। भाषा समिति का भी ध्यान रखें कि कोई कटु वचन न निकल जाए, अयथार्थ भाषा भी नहीं निकले। एषणा समिति में आसक्ति बाधक न बन जाए अन्य समितियों-गुप्तियों में भी हमारी जागरूकता रहे। आसक्ति से दोषों का सेवन न हो जाए। हम जीवन में सम्यक् दर्शन, सम्यक् चारित्र की साधना जागरूकता से करते रहें।

मुख्य मुनि महावीर कुमार जी ने अपने उद्बोधन में कहा कि वर्धमान महावीर के शासन में वर्धमान के प्रतिनिधि के सान्निध्य में त्रिदिवसीय वर्धमान महोत्सव का आयोजन हो रहा है। वर्धमानता सबको प्रिय होती है। तेरापंथ धर्मसंघ एक वर्धमान धर्मसंघ है। संख्या के साथ गुणवत्ता भी वर्धमान होती है, तो उस धर्मसंघ या संगठन की तेजस्विता प्रखर होती जाती है। हमारा धर्मसंघ तीन बिंदुओं से और वर्धमान बन सकता है, वे हैं–वैराग्य, श्रम और सहिष्णुता।

जो व्यक्ति वैराग्य के रंग से रंजित रहता है उसके चारित्रिक पर्यव भी निर्मल बन जाते हैं, उसके मन में पापभीरूता रहती है, अनुकंपा का भाव रहता है। दूसरा बिंदु है–श्रम। आलस्य मनुष्य का बहुत बड़ा शत्रु है। जो व्यक्ति परिश्रम करता है उसका स्वास्थ्य भी अच्छा रहता है और वह धर्मसंघ की, जिन शासन की प्रभावना भी कर सकता है। श्रमण का तो अर्थ ही है कि जो श्रमशील हो, पुरुषार्थी हो। श्रमशील व्यक्ति उपयोगी बन जाता है। तीसरा बिंदु है–अहंकार, धैर्य की कमी और क्रोध की प्रखरता असहिष्णुता का कारण बनते हैं। हम सहनशीलता की दिशा में आगे बढ़ने का प्रयास करें।

स्थानकवासी संप्रदाय से मुनि जयेशचंद्र जी एवं मुनि सुभाषचंद्र जी व कई साध्वियाँ पूज्यप्रवर की सन्निधि में पधारे। पूज्यप्रवर का उनसे अति संक्षिप्त वार्तालाप हुआ।

साध्वीवृंद ने वर्धमान महोत्सव पर गीत की प्रस्तुति दी। महिला मंडल अध्यक्षा सीमा कोठारी ने अपनी भावना अभिव्यक्त की। ज्ञानशाला के ज्ञानार्थियों ने सुंदर प्रस्तुति कर १०८ गुणों की माला पूज्यप्रवर को समर्पित की। ज्ञानशाला प्रशिक्षिकाओं, कन्या मंडल ने गीत की प्रस्तुति दी। तेरापंथी सभा व तेयुप ने समूह गीत की प्रस्तुति दी। अणुव्रत समिति की प्रस्तुति हुई। मनोहर गोखरू ने अपनी भावना व्यक्त की। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

अंधकार से प्रकाश की ओर ले जाता है ज्ञान : आचार्यश्री महाश्रमण

अम्बरनाथ, २५ जनवरी, २०२४

अणुव्रत अनुशास्ता, युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण जी आज प्रातः विहार कर अम्बरनाथ पधारे। पावन प्रेरणा प्रदान करते हुए महातपस्वी ने फरमाया कि जैन वाङ्मय में एक ग्रंथ है तत्त्वार्थाभिगम सूत्र। उसका सूत्र है–सम्यक् ज्ञान, सम्यक् दर्शन और सम्यक् चारित्र यह मोक्ष मार्ग है। मोक्ष के लिए सम्यक् चारित्र का महत्त्व है तो सम्यक् ज्ञान-दर्शन का भी महत्त्व है।

हमारे जीवन में सम्यक् ज्ञान का बड़ा महत्त्व है। पहले ज्ञान फिर दया या आचार। ज्ञान के साथ आचार भी हो। विद्या और चरण से मोक्ष मिलता है। ज्ञान एक पवित्र तत्त्व है। ज्ञान सम्यक् है तो आचरण भी सम्यक् हो सकता है। ज्ञान प्रकाश करने वाला है। अंधकार में प्रकाश का महत्त्व होता है। कहा गया है–अंधकार से मुझे ज्ञान की ओर ले चलो, असत्य से मुझे सत्य की ओर ले चलो। मृत्यु से मुझे अमरत्व को प्राप्त कराओ। ज्ञान अंधकार से ज्ञानात्मक प्रकाश की ओर ले जाने वाला होता है।

विद्याओं में अध्यात्म विद्या का अपना महत्त्व है। जहाँ आत्मा, स्वर्ग, नरक आदि सिद्धांतों का प्रतिपादन है। स्कूलों, कॉलेजों में विद्यार्थियों को भौतिक विद्या के साथ आध्यात्मिक विद्या भी ज्ञात होती रहे। अध्यात्म विद्या के अनुरूप थोड़ा आचरण भी हो जाए। ज्ञान जीवन की एक उपलब्धि है, पर आचरण कैसा है वह भी महत्त्वपूर्ण पक्ष है। विद्या संस्थानों में संस्कार युक्त शिक्षा हो।

ज्ञान और आचारण दोनों जीवन में परिपूर्ण हो। अगर एक पक्ष भी कमजोर है, तो बहुत बड़ी कमी रह जाती है। यह संसार एक अटवी है। इस अटवी में किसी के पास ज्ञान तो है पर आचार नहीं है, किसी के पास आचार है पर ज्ञान नहीं है, ऐसे प्राणी इस संसार में ही रह जाते हैं। किसी में सम्यक् ज्ञान और आचार दोनों का योग होता है तो वे इस संसार-अटवी को पार कर मोक्ष भी प्राप्त कर सकते हैं।

(शेष पृष्ठ ३ पर)

पके हुए पत्ते सा है मनुष्य का जीवन : आचार्यश्री महाश्रमण

मुम्बा, २६ जनवरी, २०२४

मुंबई की उपनगरीय यात्रा में अहिंसा यात्रा प्रणेता आचार्यश्री महाश्रमण जी आज प्रातः मुम्बा पधारे। महायोगी ने प्रेरणा पाथेय प्रदान करते हुए फरमाया कि हमारे शास्त्रों में सुभाषित अच्छी शिक्षाएँ प्राप्त होती हैं। पृथ्वी पर तीन रत्न हैं–जल, अन्न और सुभाषित। जल और अन्न का जीवन में बहुत महत्त्व है, इनके बिना जीवन यापन करना मुश्किल हो सकता है। सुभाषित के दो अर्थ हो सकते हैं–अच्छा, मधुर बोलना और दूसरा शास्त्रों में प्राप्त अच्छी वाणी, सूक्त और श्लोक। अन्य भी रत्न हो सकते हैं पर कवि ने कह दिया कि वे लोग मूढ़ हैं जो पाषाण के टुकड़ों को रत्न कहते हैं। पानी का हमारे जीवन में बड़ा महत्त्व है। हम ध्यान दें कि पानी का अपव्यय न हो, उसका अपना महत्त्व है।

आगम साहित्य में अनेक सूत्र मिलते हैं, उनमें से एक है कि हमारा जीवन किस प्रकार है? उत्तर दिया–वृक्ष का पत्ता, पका हुआ पान जैसे गिर जाता है, उसी प्रकार एक दिन मनुष्य का जीवन भी पूरा हो जाता है। इसीलिए शिक्षा दी गई कि समय भर भी प्रमाद मत करो। पाप में हमारा समय न बीते। समय का भी मूल्य है। २४ घंटों में समय का सदुपयोग करें। यह तो निरंतर गतिमान है। उम्र आ गई अब जीवन में समय का अच्छा उपयोग करें। एक जन्म दिवस आता है, जीवन का एक वर्ष कम हो जाता है। गया हुआ समय वापस नहीं आता है।

हम शुभ भावों में रह सकें। व्यस्त तो भले रहें पर अस्त-व्यस्त न हों। चित्त में शांति रहनी चाहिए। मन में तनाव से स्वभाव चिड़चिड़ा हो जाता है। समय का उपयोग अध्यात्म साधना में भी किया जाए। सामायिक के साथ स्वाध्याय, जप, ध्यान, तत्त्व चर्चा में भी समय लगाएँ। सुबह-सुबह धर्म-अध्यात्म की खुराक प्राप्त कर लें। अन्य कार्यों में भी धर्म को आगे रखकर कार्य करें।

७५-८० वर्ष आने के बाद निवृत्ति लें, धर्म साधना में लग जाएँ, संन्यासी सा जीवन हो जाएँ।

साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभा जी ने कहा कि कहावत है कि धर्म रक्षित है, तो वह सब की रक्षा करता है। वर्तमान के परिपेक्ष में यदि पर्यावरण सुरक्षित रहता है, तो प्राणीमात्र के अस्तित्व की सुरक्षा करता है। हम भगवान महावीर के अहिंसा के सिद्धांत को समझें। जीव और अजीव दोनों का संयम करें। पानी का भी हम संयम करें। अहिंसा की आराधना करने वाले के मन में संयम की चेतना जागृत होती हैं।

स्थानीय तेरापंथ युवक परिषद के अध्यक्ष नवरतनमल चोरड़िया, स्थानीय स्वागताध्यक्ष कैलाश बोहरा, नगरसेवक राज किणे, नगरसेवक सानूभाई पठान, स्थानकवासी समाज के राजेश मेहता व बाबाजी सखाराम पाटिल स्कूल के कुणाल पाटिल ने अपनी भावना अभिव्यक्ति की। तेयुप एवं तेमम ने संयुक्त रूप से स्वागत गीत का संगान किया। तेरापंथ कन्या मंडल की कन्याओं ने भी गीत के माध्यम से अपने आराध्य के चरणों की अभ्यर्थना की। ज्ञानशाला के ज्ञानार्थियों ने अपनी भावपूर्ण प्रस्तुति दी।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

अंधकार से प्रकाश की ओर ले जाता...

(पृष्ठ २ का शेष)

आचार्य तुलसी ने अणुव्रत आंदोलन चलाया था कि आदमी के जीवन में अच्छाइयाँ आएँ। छोटे-छोटे अच्छे संकल्पों की व्यवस्था की थी। आचार्य महाप्रज्ञ जी प्रेक्षाध्यान कराते थे, इससे भीतर से रूपांतरण हो सकता है, हमारे संस्कार, चेतना अच्छे बन सकते हैं।

इस दुर्लभ मानव जीवन को हमने प्राप्त कर लिया है। इसका हम बढ़िया उपयोग कर मानव जीवन को सार्थक बनाने का प्रयास करें। जीवन में सद्भावना, नैतिकता और नशामुक्ति रहे। समाज हो या राजनीति सब जगह अच्छे सिद्धांत रहें। हमें आगे के, जीवन के बाद के बारे में भी ध्यान रखना चाहिए। आत्मा तो अमर है, आत्मा का कल्याण हो। जो साधनारत साधु-संत हैं, यह दुनिया के लिए अच्छी बात है। साधु तो चलते-फिरते तीर्थ होते हैं। संतों की थोड़ी सी वाणी सद्ज्ञान प्राप्त कराने वाली हो सकती है।

शांति, क्षमा, सेवा और अनासक्ति में वर्धमान...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

सारी अनुकूलताएँ जीवन में मिलती रहें यह जरूरी नहीं। कहीं सम्मान तो कहीं अपमान भी मिल सकता है। पर हम मानसिक शांति रखें। हमें शांति में वर्धमान होना चाहिए। मन में अनासक्ति का भाव रहे। कमल की तरह संसार में रहते हुए भी निर्लिप्त रहने का प्रयास करे।

हमारा धर्मसंघ आचार्य भिक्षु से संबंधित है। लगभग २६४ वर्ष होने जा रहे हैं। आचार्य भिक्षु के इतिहास को देखें, कितने कष्ट उन्होंने झेले, फिर भी वे समभाव में रहें। आचार्य तुलसी के जीवन में कितने विरोध के प्रसंग आए, उन्होंने भी प्रतिकूल स्थितियों को समता और सहिष्णुता से सहन किया। प्रतिकूल परिस्थितियाँ आ जाएँ तो हम समता, सहिष्णुता का भाव रखें, अनासक्ति का भाव रखें। आसक्ति से व्यक्ति को बचना चाहिए, साधु को गृहस्थों से कितनी उपयोगी सामग्री प्राप्त होती है, उनमें भी चारित्रात्माओं को अनासक्ति की भावना रखनी चाहिए। संतोष परम सुख है, साधु अल्पेच्छ रहे, अपने आपको अभिसंतुष्ट रखें।

साधु की निर्लोभता की साधना तो होनी ही चाहिए। समणियों में भी आसक्ति, संतोष का भाव रहना चाहिए। गृहस्थों में भी इच्छा परिमाण, भोग-उपभोग के प्रति जागरूकता रहे। संघ, संघपति और संविधान के प्रति निष्ठापूर्ण जागरूकता रहे। हम अपनी आत्मा, संघ-संगठन व स्वास्थ्य के प्रति भी जागरूक रहें।

हमारे साधु-साध्वियाँ जो चाहें बहिर्विहार में हों या गुरुकुलवास में हो वर्धमानता का प्रयास करते रहें। सेवा की अपेक्षा हो तो तैयार रहें। दिमागी सेवा देना भी बहुत महत्त्वपूर्ण है। शारीरिक सेवा को देने के लिए तैयार रहें। Physical और Intellectual दोनों प्रकार की सेवा देने का प्रयास करें। सेवा केंद्रों में वृद्ध-ग्लानों की सेवा करना अच्छा कार्य है। इससे निर्जरा और पुण्य बंध दोनों हो सकते हैं। सेवा में वर्धमान रहे। सेवा करने वाला ही मेवा प्राप्त कर सकता है।

साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभा जी ने कहा कि ऊँचाई तभी उपयोगी होती है जब उसकी जड़ें मजबूत होती हैं। वृक्ष विशालता तभी प्राप्त करता है जब उसकी जड़ें मजबूत होती हैं, और उन जड़ों को सम्यक् सिंचन मिलता है। वृक्ष की जड़ों को माली से सिंचन मिलता है और संगठन का विस्तार तभी होता है जब संगठन की जड़ों को भी सिंचित किया जाता है। तेरापंथ धर्मसंघ की यशस्वी आचार्य परंपरा ने इस धर्मसंघ को सिंचित किया है और वर्धमान बनाया है। इसके सदस्यों में गणनिष्ठा, गणीनिष्ठा, आचार निष्ठा, मर्यादा निष्ठा और अनुशासन निष्ठा है। इसी के कारण धर्मसंघ वर्धमानता की ओर अग्रसर हो रहा है। जिस संघ में अच्छे संस्कारों का बीजारोपण होता है, वह संघ प्रवर्धमान बनता है। तेरापंथ धर्मसंघ में प्रारंभ से ही साधु-साध्वियों में अच्छे संस्कारों का बीजारोपण किया जाता है। तेरापंथ धर्मसंघ की एक मर्यादा है कि मैं अपना शिष्य-शिष्या नहीं बनाऊँगा। चतुर्दशी की हाजरी के द्वारा भी साधु-साध्वियों को संस्कारों की प्रेरणा प्राप्त होती है। यदि कोई सदस्य मार्ग से च्युत भी हो जाता है तो ये संस्कार उसे पुनः मार्ग पर लाने में सहयोगी बनते हैं। संघ की प्रवर्धमानता का एक हेतु है–विनम्रता। इन स्वस्थ परंपराओं के कारण हमारा धर्मसंघ प्रवर्धमान हो रहा है। वर्धमान महोत्सव के उपलक्ष्य में मुनिवृंदों ने गीत की प्रस्तुति दी। शिव सेना नगर प्रमुख राजेश मोरे ने पूज्यप्रवर के दर्शन किए एवं अपनी भावना अभिव्यक्त की।

मुनि अनुशासन कुमार जी एवं मुनि मृदुकुमार जी ने भी पूज्यप्रवर के प्रति अभिवंदना अभिव्यक्त की।

जिम खाना के बच्चों ने प्रस्तुति दी। तनुश्री प्रह्लाद भोंसले ने अपनी अभिव्यक्ति दी। ज्ञान मंदिर स्कूल के विद्यार्थियों ने गीत की प्रस्तुति दी। मदन कोठारी ने अपनी कृति पूज्यप्रवर को अर्पित की। डोंबीवली टीपीएफ से रवि कुमट ने पूज्यप्रवर की अभिवंदना में अपनी भावना अभिव्यक्त की।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभा जी ने कहा कि आज अम्बरनाथ में अमृत पुरुष का शुभागमन हुआ है। अमृत का निवास भगवान के भक्तों, महान पुरुषों के कंठ में होता है। कितने लोग आचार्यप्रवर से अमृत का पान करने आते हैं। आचार्यप्रवर के प्रति लोगों का आकर्षण है। आचार्यप्रवर लोगों की खोट लेते हैं। जिनके भीतर पवित्रता होती है, वही दूसरों की खोट ले सकता है।

पूज्यप्रवर के स्वागत में विधायक बालाजी किलेकर ने अपनी भावना अभिव्यक्त की। तेमम व तेयुप, सभाध्यक्ष हितेश कोठारी, जैन समाज वासुपूज्य महिला मंडल ने अपनी भावना अभिव्यक्त की।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

✦ हम अहिंसा की साधना करते हुए कषाय को प्रतनु करने का प्रयास करें।

आचार्य श्री महाश्रमण

महिला मंडल के विविध आयोजन

'अनमोल जोड़ी सास-बहू की' कार्यशाला का आयोजन

ग्रीन पार्क, दिल्ली।

साध्वी डॉ० कुंदनरेखा जी के सान्निध्य में अभातेममं द्वारा निर्देशित, तेममं, साउथ दिल्ली द्वारा 'अनमोल जोड़ी सास-बहू की' कार्यशाला का आयोजन किया गया। इसमें आठ सास-बहू के जोड़ों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। कार्यक्रम की शुरुआत साध्वीश्री के नमस्कार महामंत्र से हुई। इसके बाद साध्वीश्रीजी ने दीर्घश्वास प्रेक्षा का पाँच मिनट का कार्यक्रम करवाया।

कार्यक्रम की संयोजिका रेखा बैद व सभी उपसंयोजिकाओं के साथ सभी ने प्रेरणा गीत का संगान किया। मंत्री वर्षा बैंगानी ने सभी का हार्दिक स्वागत किया। इसके बाद सभी सास-बहू की जोड़ियों को आमंत्रित किया गया और उन्होंने लघु नाटिका, कविता, गीतिका ओद के रूप में सुंदर प्रस्तुति दी। एक रोचक गेम भी खेला गया, जिसने बहू को अपनी सास को दिए गए सामान से सजाना था। इसमें प्रथम स्थान पर रंजना-अक्षा छाजेड़, द्वितीय स्थान पर इंदिरा-पायल नाहटा रही।

साध्वीश्री जी ने भी सास-बहू के रिश्ते का महत्त्व समझाते हुए कहा कि सास-बहू का रिश्ता हमेशा था, है और रहेगा। परिवार में संतुलन बनाए रखने के लिए सबके प्रति सम्मान होना चाहिए। वाणी पर संयम रखना जरूरी है। प्रमोद की भावना जागृत हो जाए तो रिश्ते फलते-फूलते हैं।

अध्यक्षा शिल्पा बैद ने आभार प्रकट किया और प्रतियोगी सास-बहू की प्रस्तुति की प्रशंसा की। उन्होंने पूरी टीम की गोष्ठी को सुव्यवस्थित रूप से संचालित करने की सराहना की। मंडल को बहनों से कुछ आह्वान किए और आने वाले समय में होने वाली गतिविधियों की जानकारी दी गई।

पूर्वाध्यक्ष रजनी बाफना ने अपने विचार रखे। प्रोफेसर सुषमा ने इस विषय पर सुझाव दिए। कार्यक्रम का संचालन रेखा बैद ने किया। कार्यक्रम की संयोजिका रेखा बैद व उपसंयोजिका सुषमा कोठारी, दिशा बाफना, सपना लालानी, गुंजन पुगलिया, नेहा सेठिया और दीपिका सेठिया ने इस गोष्ठी को सफल बनाने में सहयोग किया।

टिटलागढ़।

नमस्कार महामंत्र, प्रेक्षाध्यान एवं मंगलाचरण से कार्यक्रम का प्रारंभ हुआ। अध्यक्ष बबीता जैन ने सभी का स्वागत किया। कार्यक्रम में सास-बहू की जोड़ियों ने अपने अनुभव बताए। कैसे आपस में तालमेल एवं सामंजस्य रखा जाए प्रस्तुतियों से समझाया।

कार्यक्रम में कई वर्किंग बहुओं ने वीडियो कॉल के द्वारा कार्यक्रम में भाग लिया। सास-बहू की सात भाग लेने वाली जोड़ियों के नाम हैं–मंजू जैन एवं पायल, स्नेह जैन एवं रानी जैन, प्रभा जैन एवं खुशबू जैन, ललित जैन एवं सुभद्रा जैन एवं खुशबू जैन, किरण जैन एवं पल्लवी जैन, सुंदरी जैन एवं पूनम जैन, शांति जैन एवं सिल्की जैन–इन सात जोड़ियों ने कार्यक्रम में चार चाँद लगा दिए। सभी सास-बहू की जोड़ियों को पुरस्कार देकर सम्मानित किया गया। कार्यक्रम का संचालन सुभद्रा जैन ने किया। आभार ज्ञापन किरण जैन ने किया।

गंगाशहर।

अभातेममं के निर्देशानुसार स्थानीय तेममं के तत्त्वावधान में मुनि श्रेयांस कुमार जी के सान्निध्य में एवं मुनि चैतन्य कुमार जी 'अमन' के निर्देशन में सास-बहू कार्यशाला का आयोजन तेरापंथ भवनमें ग्रीन हाउस में किया गया। कार्यशाला का आगाज महिला मंडल सदस्याओं ने समूह स्वर में किया गया। तेममं की मंत्री मीनाक्षी आंचलिया ने समताल श्वास प्रेक्षाध्यान का प्रयोग करवाया। सभाध्यक्ष संजू लालाणी ने आगंतुकों का स्वागत-अभिनंदन किया।

इस अवसर पर मुनि चैतन्य कुमार जी 'अमन' ने कहा कि सास और बहू में माँ बेटी का संबंध होता है। सास का वात्सल्य भाव और बहू की विनम्रता से संबंध मजबूत बनते हैं। जहाँ एक-दूसरे की भावनाओं को आदर-सम्मान दिया जाता है उन रिश्तों में शक्कर की मिठास व नमक का स्वाद प्रतीत होता है। यह तभी संभव है जब आज आदेशात्मक भाषा का नहीं, सुझाव की भाषा का प्रयोग होता है।

मुनि श्रेयांस कुमार जी ने गीत प्रस्तुत करते हुए सास-बहू को वात्सल्य व विनम्रता के भाव बढ़ाने की सलाह दी। इस अवसर पर सास-बहू की लगभग २० जोड़ियाँ उपस्थित रहीं। बहनों ने गीत, कविता, परिसंवाद, लघु नाटिका के माध्यम से सुंदर प्रस्तुति दी। कार्यक्रम में लगभग २५०-३०० बहन-भाईयों की उपस्थिति रही।

कार्यक्रम के पश्चात प्रस्तुति देने वाले जोड़ों को पुरस्कृत कर सम्मानित किया गया। कार्यक्रम का संचालन संतोष बोथरा ने किया। सुधा बोथरा ने आभार ज्ञापित किया। महिला मंडल सहमंत्री बिंदु छाजेड़ ने आगामी कार्यक्रमों की जानकारी दी।

दिव्यांग विद्यालय में सेवा कार्य

राउरकेला।

अभातेममं के समृद्ध राष्ट्र योजना के अंतर्गत महिला मंडल ने लाठिकटा स्थित राधाकृष्णन दिव्यांग विद्यालय में जाकर बच्चों के साथ समय बिताया एवं उन्हें महिला मंडल की तरफ से आर्थिक सहयोग तथा जरूरत की सामग्री दी गई। बहनों ने बच्चों को गेम्स खिलाए और विजेताओं को पुरस्कृत किया। महिला मंडल की अध्यक्षा तरुलता जैन ने कहा कि बच्चों को अपने जीवन में एक लक्ष्य का निर्धारण करना चाहिए तथा प्रसिद्ध अमरीकी लेखिका हेलेन केलर का उदाहरण देते हुए बताया कि किस तरह दृष्टिहीन और बधिर होते हुए भी वे हिम्मत से आगे बढ़ती गई।

ओडिशा के मुख्यमंत्री नवीन पटनायक द्वारा पुरस्कृत लक्ष्मी नाम की बच्ची ने अपनी सुमधुर आवाज से सभी को मोहित कर दिया। महिला मंडल की १३ बहनों के साथ, सभा के अध्यक्ष छगनलाल जैन, प्रवीण जैन, तेयुप के उपाध्यक्ष शीतल डागा, जीतेंद्र दुगड़ एवं गौरव जैन की उपस्थिति रही।

✦ *ऐसे कार्यकर्ता भी अपने आपमें साधुवाद के पात्र होते हैं, जो निःस्वार्थ भाव से जनता की नैतिक सेवा करने का प्रयास करते हैं और अपनी शक्ति का नियोजन इस पवित्र सेवा कार्य में करते हैं।*

– आचार्यश्री महाश्रमण

गणतंत्र दिवस पर विविध कार्यक्रमों के आयोजन

साउथ हावड़ा

तेयुप द्वारा ७५वें गणतंत्र दिवस एवं तेयुप सदस्य सुनील-शांता सिंघी के वैवाहिक वर्षगाँठ के उपलक्ष्य पर कम्युनिटी हेल्प, रामकृष्णपुर घाट के निकट स्कूल में पाठ्य सामग्री, मिठाई आदि वितरण किया गया। कार्यक्रम का प्रारंभ सामूहिक मंत्रोच्चार के साथ किया गया।

तेयुप अध्यक्ष गगन दीप बैद ने सभी का स्वागत किया। स्कूल के ५० बच्चों को पाठ्य सामग्री वितरण किया गया। कार्यक्रम में सहमंत्री सुनीत नाहटा, कोषाध्यक्ष एवं प्रभारी विजय राज पगारिया सहित अनेक सदस्य उपस्थित थे। प्रायोजक विजय सिंह मनोज कुमार सिंघी का परिषद द्वारा आभार व्यक्त किया गया। उपस्थित सभी का आभार ज्ञापन संयोजक मनीष बैद ने किया।

राजराजेश्वरी नगर

७५वें गणतंत्र दिवस के उपलक्ष्य में तेममं की बहनों द्वारा अध्यक्ष सुमन पटावरी के निर्देशन में माइल सांड्रा गवर्नमेंट स्कूल में ध्वजारोहण समारोह में सहभागिता दर्ज करवाई उपाध्यक्ष मंजू बोथरा, प्रचार-प्रसार मंत्री पूनम दक ने अपने भाव व्यक्त किए।

संगठन मंत्री शारदा बैद, मंजू बैद, उषा कोठारी, मधु गौशल, सहमंत्री ममता दुगड़, सोनू दक की उपस्थिति रही। सभी बच्चों को गिफ्ट वितरण किए गए। मंत्री पदमा मेहर ने संयोजन किया।

उत्तर हावड़ा

७५वें गणतंत्र दिवस के अवसर पर तेयुप, उत्तर हावड़ा एवं तेरापंथ किशोर मंडल, उत्तर हावड़ा के सदस्यों ने सभा ट्रस्ट के साथ झंडारोहण के कार्यक्रम में शामिल हुए। झंडारोहण उपरांत एक साथ सभी उपस्थित जनों ने राष्ट्रगान का संगान किया।

उत्तर हावड़ा ट्रस्ट के उपाध्यक्ष-प्रथम अशोक भंसाली, मंत्री बुधमल लुनिया एवं टीम, सभा के अध्यक्ष राकेश संचेती, मंत्री सुरेंद्र बोथरा, महिला मंडल अध्यक्षा सुजाता दुगड़, कोलकाता महासभा के मुख्य न्यासी जतनलाल पारख आदि अनेक सभा-संस्थाओं के पदाधिकारीगण एवं अन्य गणमान्यजन उपस्थित थे।

अहमदाबाद

अभातेममं के निर्देशानुसार तेममं, अहमदाबाद द्वारा ७५वें गणतंत्र दिवस के उपलक्ष्य में शाहीबाग एवं कांकरिया दोनों जगह कन्या सुरक्षा सर्कल में ध्वजारोहण का कार्यक्रम आयोजित हुआ। प्रथम चरण–कन्या सुरक्षा सर्कल, शाहीबाग। द्वितीय चरण–कन्या सुरक्षा सर्कल, कांकरिया कार्यक्रम का शुभारंभ शाहीबाग के ट्रस्टी सज्जन सिंघवी और कांकरिया में संरक्षिका सावित्री लुनिया ने नमस्कार महामंत्र से किया।

शाहीबाग में मुख्य अतिथि जैस्मीन बेन कॉरपोरेटर ने और कांकरिया में डॉक्टर अनिल रावल, सब-इंस्पेक्टर रीटा गोलछा तथा सभी सभा-संस्थाओं के पदाधिकारीगण की उपस्थिति में ध्वजारोहण व राष्ट्रगान का संगान किया। मुख्य अतिथियों का शॉल एवं साहित्य से सम्मान किया गया। महिला मंडल की बहनों ने गीत का संगान किया। महिला मंडल अध्यक्षा हेमलता परमार ने स्वागत वक्तव्य दिया।

कार्यक्रम का संचालन शाहीबाग में रेखा सुतरिया एवं कांकरिया में संयोजिका मंजू दुगड़ ने किया। आभार ज्ञापन शाहीबाग में मंत्री बबीता भंसाली ने और कांकरिया में कार्यसमिति सदस्य रचना बोहरा ने किया।

जैन संस्कृति के आलोक में श्रीराम

दिल्ली।

साध्वी अणिमाश्री जी एवं समणी निर्देशिका जयंतप्रज्ञा जी के सान्निध्य में दिल्ली सभा, अणुव्रत न्यास एवं भगवान महावीर मेमोरियल समिति के तत्त्वावधान में अणुव्रत भवन में एक विशेष विचार संगोष्ठी का आयोजन हुआ। जिसका विषय था–'जैन संस्कृति के आलोक में श्रीराम'। इस कार्यक्रम में संघ के प्रचारक प्रेमकुमार, भारतीय ज्ञानपीठ के ट्रस्टी पुनीत जैन, कल्याण परिषद के संयोजक के०सी० जैन, मांगीलाल जैन, विपिन जैन, संपत नाहटा आदि अनेक गणमान्य व्यक्ति कार्यक्रम में उपस्थित हुए।

साध्वी अणिमाश्री जी ने कहा कि जैन परंपरा में सिद्ध आत्मा के रूप में वंदनीय राम जन-जन की आस्था के धाम हैं। राम के जीवन की प्रत्येक घटना मैत्री, प्रेम, करुणा की कहानी है। अखंड समता के साधक राम के जीवन का हर प्रसंग रोमांचित एवं प्रेरित करने वाला है। राज्याभिषेक के लिए आहूत राम को वनवास जाने का निर्देश बिलकुल भी विचलित नहीं कर सका, यह थी राम की अखंड समता की साधना। जीवन के हर मोड़ पर प्रतिकूलता में उन्होंने अनुकूलता को संयोजित किया। हर रिश्ते को सकारात्मक सोच का धरातल दिया।

जैन धर्म के बीसवें तीर्थंकर भगवान मुनिसुव्रत के बरतारे में श्रीराम ने अपनी साधना-आराधना को संपूर्णता का शिखर देकर अपने जीवन को ही नहीं, धरणी-धाम को भी धन्य बना दिया। आज राम को हम सब मान रहे हैं लेकिन जरूरत इस बात की है कि हम राम की मानें, ताकि आने वाली हजारों पीढ़ियों के लिए हम माईल स्टोन बन जाएँ।

समणी सन्मतिप्रज्ञा जी ने कहा कि पाँचवें देवलोक से अयोध्या की धरा पर जन्म लेने वाले राम ने अपने कर्तृत्व से व्यक्तित्व को सँवारा। अपने गुणों का संवर्धन करके अपने चिंतन, चरित्र व व्यवहार को उत्कृष्टता दी।

साध्वी कर्णिकाश्री जी, साध्वी डॉ० सुधाप्रभा जी, साध्वी समत्वयशा जी, साध्वी मैत्रीप्रभा जी, समणी जयंतप्रज्ञा जी एवं समणी सन्मतिप्रज्ञा जी ने गीत की सुमधुर प्रस्तुति दी।

दिल्ली सभा के सदस्यों ने साध्वीश्री द्वारा रचित गीत की भावपूर्ण प्रस्तुति दी। ज्ञानशाला की प्रशिक्षिकाओं एवं महिला मंडल की बहनों ने मंगल संगान की प्रस्तुति दी। कल्याण परिषद के संयोजक के०सी० जैन, अणुव्रत न्यास से संपत नाहटा, अजातशत्रु मांगीलाल सेठिया, ज्ञानपीठ से पुनीत जैन, संघ प्रचारक प्रेमकुमार, मुंबई से समागत अनिल बाफना, अभातेममं की वरिष्ठ उपाध्यक्ष सुमन नाहटा, रमेश कांडपाल ने अपने भावों की प्रस्तुति दी। आभार ज्ञापन दिल्ली सभा के उपाध्यक्ष बाबूलाल दुगड़ ने किया। कार्यक्रम का संचालन सभा के महामंत्री प्रमोद धोड़ावत ने किया।

ज्ञानशाला के ज्ञानार्थियों का परीक्षा परिणाम घोषित

गंगाशहर।

मुनि श्रेयांस कुमार जी के सान्निध्य में तथा मुनि चैतन्य कुमार जी 'अमन' के निर्देशन में ज्ञानशाला के ज्ञानार्थियों की वार्षिक परीक्षा का आयोजन स्थानीय तेरापंथ भवन में हुआ। उसका परिणाम घोषित किया गया। ज्ञानार्थियों के प्रथम भाग में दक्ष रांका, चेरी बोथरा प्रथम, मनस्वी चौपड़ा, भव्य नाहटा, दीपांकर छाजेड़, द्वितीय तथा पूर्वी बैद, मानसी पवार, जैनम सांड तृतीय रहे।

भाग-२ में मान्या जैन, हिमांशु छाजेड़ प्रथम, चिन्मय डागा, कृति बणोट द्वितीय तथा पद्मश्री छल्लाणी, रुही बांठिया, आर्यन भंसाली ने तृतीय स्थान प्राप्त किया।

भाग-३ में सृष्टि ललवाणी प्रथम, निशांत ललवाणी द्वितीय तथा तृतीय स्थान पर अपूर्वा मरोठी, ख्याति पारख, ईशान भंसाली रहे। चतुर्थ भाग में पलक जैन प्रथम, आराध्या पुगलिया द्वितीय, हिमांशी छल्लाणी व यश राखेचा तृतीय रहे। पंचम भाग में नुपुर नाहर प्रथम, धरणेंद्र चोरड़िया द्वितीय तथा शुभम बोथरा ने तृतीय स्थान प्राप्त किया।

इस अवसर पर मुनि चैतन्य कुमार जी 'अमन' ने कहा कि ज्ञानार्थियों को सदैव आगे से आगे विकास करते हुए प्रयत्नशील रहना चाहिए। ज्ञान और सत्संस्कार प्राप्त करते हुए जीवन को सफल बनाने का प्रयत्न करना चाहिए। मुनि श्रेयांस कुमार जी ने मंगलपाठ श्रवण कराया।

इस अवसर पर ज्ञानशाला संयोजिका सुनीता पुगलिया, ज्ञानशाला व्यवस्थापक देवेंद्र डागा, ज्ञानशाला प्रभारी चैतन्य रांका, सह-प्रभारी रजनीश गोलछा, तेयुप कार्यकारिणी सदस्य विपिन बोथरा सहित सभी प्रशिक्षिकाएँ उपस्थित थीं। कार्यक्रम का संचालन प्रशिक्षिका रुचि छाजेड़ ने किया।

भव्य भिक्षु भक्ति का आयोजन

सिरियारी।

तेरापंथ के आद्य प्रवर्तक आचार्य भिक्षु की निर्वाण स्थली सिरियारी में तेरस के अवसर पर भिक्षु भक्ति का आयोजन किया गया। आज के कार्यक्रम में नोखा-जोरावरपुरा से समागत भिक्षु भजन मंडली की प्रस्तुति हुई।

कार्यक्रम का शुभारंभ मुनि विनीत कुमार जी के नमस्कार महामंत्रोच्चार से हुआ। मुनिश्री ने भिक्षु स्वामी की स्तुति में जयाचार्य द्वारा रचित दोहों का रसपान कराया। मुनि धर्मेश कुमार जी ने स्वामीजी का ध्यानपूर्वक जाप करने की प्रेरणा दी व ५० वर्ष से ऊपर के लोगों को सवा करोड़ के जाप की प्रेरणा दी। मुनि आकाश कुमार जी ने स्वरचित कविता पाठ से भिक्षु स्वामी के प्रति अपने उद्गार व्यक्त किए।

मुनि हितेंद्र कुमार जी ने स्वामी जी के ३००वें जन्म दिवस के उपलक्ष्य में ३०० करोड़ के जाप की प्रेरणा दी।

कार्यक्रम में लगभग १३ से अधिक क्षेत्रों के लोग उपस्थित थे। प्रस्तुति के क्रम में मोनिका बुच्चा, पवन कुंडलिया, पुलकित बरड़िया, वंदना महनोत की सहभागिता रही। कार्यक्रम का संचालन पाली के राहुल बालड़ द्वारा किया गया।

कार्यक्रम के अंत में विजय जैन व उत्तम सुकलेचा ने भिक्षु भजन मंडली का मोमेंटो द्वारा सम्मान किया।

संस्कृति का संरक्षण - संस्कारों का संवर्द्धन जैन विधि - अमूल्य निधि

नामकरण संस्कार

गंगाशहर।

बीकानेर निवासी, शशि देवी स्व० महावीर कोचर के सुपुत्र एवं पुत्रवधू प्रफुल्ल-दिव्या कोचर की नवजात पुत्री का नामकरण संस्कार जैन संस्कार विधि से संस्कारक धर्मेन्द्र डाकलिया, देवेंद्र डागा और विपिन बोथरा ने विधि-विधानपूर्वक संपन्न करवाया।

संस्कारक ने नामकरण पत्रक का वाचन किया। इस अवसर पर पारिवारिकजनों की उपस्थिति रही।

नूतन गृह प्रवेश

नोखा।

महेंद्र संचेती पुत्र बस्तीमल संचेती का नूतन गृह प्रवेश जैन संस्कार विधि से संस्कारक इंदरचंद बैद 'कवि' व गोपाल लूणावत ने विधि-पूर्वक मंत्रों के साथ संपन्न करवाया।

उपासक अनुराग बैद ने सहभागिता निभाई। नोखा समाज में सकारात्मकता के साथ सभी ने प्रसन्नता व्यक्त की।

जैन श्वेतांबर तेरापंथ धर्मसंघ के तपस्वी संत

आचार्य भिक्षु युग

❑ **मुनि डूंगरसीजी (गंगापुर) दीक्षा क्रमांक : ४३**

मुनिश्री ११ वर्ष की अवस्था में मुनिश्री वेणीरामजी के पास दीक्षित हुए। दस वर्ष छः माह संयम पाल अनशन कर दिवंगत हुए। १८६८ फाल्गुण शुक्ल पूर्णिमा से छह विगय (दूध, दही, घी, तेल, मिष्टान्न, कडाई विगय) और औषध का परित्याग कर दिया।

सात दिन के अनशन में लगभग २२ वर्ष की अवस्था में आपका प्रयाण हो गया।

– : साभार : शासन समुद्र : –

--: संक्षिप्त समाचार :--

सेवा कार्य

बेहाला।

७५वें गणतंत्र दिवस पर तेयुप, बेहाला द्वारा शांति निवास वृद्धाश्रम में ध्वजारोहण समारोह में अपनी सहभागिता दर्ज कराई। ध्वजारोहण वृद्धाश्रम के वरिष्ठ सदस्य द्वारा किया गया। तेयुप ने अपने सेवा कार्य के अंतर्गत वृद्धाश्रम के सदस्यों को जरूरत की राशन सामग्री प्रदान की।

कार्यक्रम का शुभारंभ वृद्धाश्रम की संयोजिका रीना सेन ने मंगलाचरण करते हुए तेयुप, बेहाला के सभी सदस्यों के लिए शुभाषीश व मंगलकामना हेतु प्रार्थना की। तेयुप के सभी सदस्यों का महत्त्वपूर्ण सहयोग रहा।

ध्वजारोहण कार्यक्रम

पूर्वांचल-कोलकाता।

तेरापंथी सभा, पूर्वांचल-कोलकाता के तत्त्वावधान में ७५वाँ गणतंत्र दिवस का कार्यक्रम मनाया गया। सभा के अध्यक्ष हनुमानमल दुगड़ ने झंडारोहण किया एवं सभी को गणतंत्र दिवस की शुभकामनाएँ प्रेषित की।

इस अवसर पर सभा, तेयुप, किशोर मंडल, टीपीएफ, महिला मंडल, कन्या मंडल एवं ज्ञानशाला प्रशिक्षिकाओं और विद्यार्थियों की अच्छी उपस्थिति रही।

✦ आस्तिक विचारधारा का आधार अध्यात्म है, जबकि नास्तिक विचारधारा भौतिकवाद से संपृक्त है।
आचार्य श्री महाश्रमण

संबोधि

❑ आचार्य महाप्रज्ञ ❑

बंध-मोक्षवाद

ज्ञेय-हेय-उपादेय

भगवान् प्राह

बारह भावनाएँ

(४) उपेक्षा भावना–अनुकूल और प्रतिकूल–दोनों ही स्थितियों में सर्वत्र सम रहना 'अपेक्षा' है। साधक को न पदार्थों से जुड़ना है और न बिछुड़ना है। पदार्थ पदार्थ है। उसमें राग-द्वेष नहीं है। राग-द्वेष है अपने भीतर। जब आदमी किसी से जुड़ता है तो राग और बिछुड़ता या घृणा करता है तो द्वेष आता है। साधक को कहीं भी राग और द्वेष दिखाई दे, वह तत्काल उनकी उपेक्षा कर अपने भीतर चला जाए। यह जैसे पदार्थों के साथ होता है, वैसे व्यक्ति के व्यक्तित्व, रूप, विशिष्ट कौशल आदि पर भी होता है। भिक्षु वक्कलि बुद्ध के रूप पर इतना मुग्ध हो गया, उसे ही निहारता रहता। बुद्ध ने कहा–'क्या है वक्कलि मेरे इस शरीर में? जैसा हाड़, मांस, रक्त आदि तुम्हारे शरीर में है, वैसे ही इसमें है। रूप को देखना है, तो बुद्ध के धर्म-कार्य का रूप देखो। जो धर्म को देखता है वह मुझे देखता है। यह भी बंधन है। आनंद बुद्ध से बंधे रहे। गौतम महावीर से बंधे रहे। बंधन का मार्ग सरल है। मनुष्य बंधन-प्रिय है। पर वह बंधन छोड़ता है तो दूसरा कहीं न कहीं जोड़ लेता है। उपेक्षा करना कठिन है। उपेक्षा भावना का साधक कहीं किसी भी जड़ और चेतन के साथ बंधता नहीं। वह आने वाले समस्त बंधनों की उपेक्षा कर तटस्थ भाव से अपने ध्येय में गति करता रहता है।

अब्राहम लिंकन राष्ट्रपति बने। संसद में भाषण देने जब खड़े हुए, तब किसी ने व्यंग्य कसा। कहा–आपको याद है, आप चमार के लड़के हैं। लिंकन ने कहा–धन्यवाद, आपने पिता का स्मरण दिलाया और मैं आगे आपसे कहना चाहता हूँ, मेरे पिताजी कुशल चमार थे। मैं इतना कुशल राष्ट्रपति नहीं बन सकूँगा। दूसरी बार फिर कहा–'वे जूते बनाते थे।' लिंकन बिलकुल उत्तेजित नहीं हुए। उसी तटस्थ भाव से कहा–'हाँ, किंतु किसी ने कभी कोई शिकायत नहीं की। क्या आपको कोई शिकायत है?'

साधक जब उपेक्षा भाव में निष्णात हो जाता है तब हर्ष और विषाद, सुख और दुःख, सम्मान और अपमान आदि द्वंद्व सहजतया क्षीण होते चले जाते हैं।

भावना के अभ्यास के लिए एक सहज सरल विधि का प्रयोग आचार्यश्री महाप्रज्ञ ने इस प्रकार बतलाया है–'भावना का अभ्यास निम्न निर्दिष्ट प्रक्रिया से करना इष्ट सिद्धि में अधिक सहायक हो सकता है। साधक पद्मासन आदि किसी सुविधाजनक आसन में बैठ जाए। पहले श्वास को शिथिल करे। फिर मन को शिथिल करे। पाँच मिनट तक उन्हें शिथिल करने के लिए सूचना देता जाए। वे जब शिथिल हो जाएँ तब उपशम आदि पर मन को एकाग्र करें। इस प्रकार निरंतर आधा घंटा तक अभ्यास करने से पुराने संस्कार विलीन हो जाते हैं और नए संस्कारों का निर्माण होता है।'

(७७) सम्यग्दर्शनसंपन्नः, श्रद्धावान् योगमर्हति।
विचिकित्सां समापन्नः, समाधिं नैव गच्छति।।

जो सम्यग् दर्शन से संपन्न और श्रद्धावान् है, वह योग का अधिकारी है। जो संशयशील है, वह समाधि को प्राप्त नहीं होता।

(७८) आस्तिक्यं जायते पूर्वं, आस्तिक्याज्जायते शमः।
शमाद् भवति संवेगो, निर्वेदो जायते ततः।।

(७९) निर्वेदादनुकंपा स्याद्, एतानि मिलितानि च।
श्रद्धावतो लक्षणानि, जायन्ते सत्यसेविनः।। *(युग्मम्)*

पहले आस्तिक्य होता है, आस्तिक्य से शम होता है, शम से संवेग होता है, संवेग से निर्वेद होता है और निर्वेद से अनुकंपा उत्पन्न होती है। ये सब सत्यसेवी श्रद्धावान् अर्थात् सम्यग्दृष्टि के लक्षण हैं।

(क्रमशः)

श्रमण महावीर

❑ आचार्य महाप्रज्ञ ❑

जीवनवृत्त : कुछ चित्र, कुछ रेखाएँ

धार्मिक परंपरा

उस समय भारत के उत्तर-पूर्व में दो मुख्य धार्मिक परंपराएँ चल रही थीं–श्रमण परंपरा और ब्राह्मण परंपरा। सिद्धार्थ और त्रिशला श्रमण परंपरा के अनुयायी थे। वे भगवान् पार्श्व के शिष्यों को अपना धर्माचार्य मानते थे। वर्द्धमान ने जिस परंपरा का उन्नयन किया, उसके संस्कार उन्हें पैतृक विरासत में मिले थे। वे किसी श्रमण के पास गए और धर्म-चर्चा की, इसकी कोई जानकारी प्राप्त नहीं है। उनका ज्ञान बहुत प्रबुद्ध था। वे सत्य और स्वतंत्रता की खोज में अकेले ही घर से निकले थे। कुछ वर्षों तक वे अकेले ही साधना करते रहे।

राजनीतिक वातावरण

उन दिनों वज्जि गणतंत्र बहुत शक्तिशाली था। उसकी राजधानी थी वैशाली। उसकी अवस्थिति गंगा के उत्तर, विदेह में थी। वज्जिसंघ में लिच्छवि और विदेह–दोनों शासक सम्मिलित थे। इसके प्रधान शासक लिच्छवि राजा चेटक थे। सिद्धार्थ वज्जि संघ के एक सदस्य-राजा थे। वर्द्धमान गणतंत्र के वातावरण में पले थे। गणतंत्र में सहिष्णुता, वैचारिक उदारता, सापेक्षता, स्वतंत्रता और एक-दूसरे को निकट से समझने की मनोवृत्ति का विकास अत्यंत आवश्यक होता है। इन विशेषताओं के बिना गणतंत्र सफल नहीं हो सकता। अहिंसा और स्याद्वाद के बीज वर्द्धमान को राजनीतिक वातावरण में ही प्राप्त हो गए थे। धार्मिक वातावरण में वर्द्धमान ने उन्हें शतशाखी बनाकर स्थायी प्रतिष्ठा दे दी।

परिवार

अपने गुणों से प्रख्यात होने वाला उत्तम, पिता के नाम से पहचाना जाने वाला मध्यम, माता के नाम से पहचाना जाने वाला अधम और श्वसुर के नाम से पहचाना जाने वाला अधमाधम होता–यह नीतिसूत्र अनुभव की स्याही से लिखा गया है।

महावीर स्वनामधन्य थे। वे अपनी सहज साधनाजनित विशेषता के कारण अनेक नामों से प्रख्यात हुए। उनके गुण-निष्पन्न नाम सात हैं–वर्द्धमान, समन (श्रमण), महावीर, सन्मति, वीर, अतिवीर और ज्ञातपुत्र। बौद्ध साहित्य में उनका नाम नातपुत्त मिलता है।

महावीर के पिता के तीन नाम थे–सिद्धार्थ, श्रेयांस और यशस्वी। उनका गोत्र था–काश्यप।

महावीर की माता के तीन नाम थे–त्रिशला, विदेहदत्ता और प्रियकारिणी। उनका गोत्र था–वाशिष्ठ।

महावीर के चुल्लपिता का नाम सुपार्श्व, बुआ का नाम यशोदया, बड़े भाई का नाम नदिवर्धन, भाभी का नाम ज्येष्ठा और बड़ी बहन का नाम सुदर्शना था।

महावीर की पत्नी का नाम यशोदा, पुत्री का नाम प्रियदर्शना, धेवली का नाम शेषवती, यशस्वती था।

महावीर का परिवार समृद्ध और शक्तिशाली था। उनके धर्म-तीर्थ के विकास में उसने अपना योगदान दिया था।

विवाह

कुमार वर्द्धमान अब युवा हो गए। उनके अंग-अंग में यौवन का उभार आ गया। वे बचपन से सुंदर थे। युवा होने पर वे अधिक सुंदर दीखने लगे, ठीक वैसे ही जैसे चाँद सहज ही कांत होता है, शरद ऋतु में वह और अधिक कमनीय हो जाता है। कुमार की यौवनश्री को पूर्ण विकसित देख माता-पिता ने विवाह की चर्चा प्रारंभ की।

कुमार वर्द्धमान के जन्मोत्सव में भाग लेने के लिए अनेक राजा आए थे। उनमें कलिंग-नरेश जितशत्रु भी था। वह कुमार को देख मुग्ध हो गया। उसी समय उसके मन में कुमार के साथ संबंध जोड़ने की साध उत्पन्न हो गई। कुछ समय बाद उसके पुत्री का जन्म हुआ। उसका नाम रखा गया यशोदा। पुत्री के बढ़ने के साथ-साथ जितशत्रु के मन की साध भी बढ़ रही थी।

जितशत्रु की रानी का नाम था यशोदया। उसने जितशत्रु से कहा, 'पुत्री विवाह योग्य हो गई है। अब आपकी क्या इच्छा है?'

(क्रमशः)

धर्म है उत्कृष्ट मंगल

❑ आचार्य महाश्रमण ❑

उपयोगिता अचेतन की

अजीव का अंतिम और अनस्तिकाय (जो अस्तिकाय नहीं है) द्रव्य है काल। उसे औपचारिक द्रव्य माना गया है, वह पर्याय है। चेतन और अचेतन पर उसका प्रभाव है। उसका गुण है वर्तमान–बीतता रहना। वह समक्षेत्र (मनुष्य क्षेत्र, अढ़ाई द्वीप) वर्ती माना गया है।

छः द्रव्य-धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय, आकाशास्तिकाय, पुद्गलास्तिकाय, जीवास्तिकाय और काल। इनमें जीवास्तिकाय के अतिरिक्त जो पाँच द्रव्य हैं, वे अजीव हैं। उन्हें 'अजीव के पाँच भेद' कहा जाता है। केवल जीवास्तिकाय ही जीव है। वह द्रव्य से अनंत है। लोक ही उसका अस्तित्व का क्षेत्र है। छः द्रव्यों में काल के अतिरिक्त पाँच अस्तिकाय हैं। उन्हें 'पञ्चास्तिकाय' कहा जाता है। पाँचों के पीछे अस्तिकाय शब्द जुड़ा हुआ है। 'अस्तिकाय' एक समस्त पद है, दो शब्दों के योग से निष्पन्न शब्द है–अस्ति + काय = अस्तिकाय। 'अस्ति' का अर्थ है प्रदेश (लघुतम और संयुक्त इकाई), काय का अर्थ है समूह, प्रदेश समूह को अस्तिकाय कहा जाता है। अस्तिकाय को सावयव (जिसके अवयव हैं) द्रव्य अथवा अवयवी भी कहा जा सकता है। अस्तिकाय का एक अर्थ और भी मिलता है–अस्ति अर्थात् जिसका अस्तित्व है और काय अर्थात् प्रदेश बहुलता। जिसका अस्तित्व है और जिसके बहुत प्रदेश हैं, वह अस्तिकाय है।

धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय और आकाशास्तिकाय तीनों द्रव्य की अपेक्षा एक-एक हैं। काल, पुद्गल और जीवास्तिकाय द्रव्य की अपेक्षा अनंत हैं। छः द्रव्यों में एक काल अप्रदेश है, शेष पाँच सप्रदेश हैं। छः द्रव्यों में एक पुद्गलास्तिकाय मूर्त (रूपी) है, शेष पाँच द्रव्य अमूर्त्त हैं। धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय, लोकाकाश और एक जीव–इनका प्रदेश-परिमाणतुल्य है, असंख्येय हैं। एक परमाणु जितने स्थान में अवगाहित होता है, समाविष्ट होता है वह एक आकाश-प्रदेश से अनंतरवर्ती दूसरे आकाश-प्रदेश में पहुँचने में जितनी कालावधि लगे, उसे समय (कालको लघुतम इकाई) कहा जा सकता है। एक आकाश-प्रदेश में एक परमाणु भी रह सकता है और अनंतप्रदेश पुद्गल-स्कंध भी उसमें समाविष्ट हो सकता है। एक जीव लोकाकाश के असंख्यातवें भाग में भी रह सकता है और लोकव्यापी भी बन सकता है। संसार में जितने जीव और अचेतन पदार्थ अभी हैं, उतने ही सदा थे और उतने ही रहेंगे। उनमें किंचित् मात्र भी नैयून्य और आधिक्य नहीं हो सकता। एक ही आकाश-प्रदेश में छहों द्रव्यों का अंशरूपेण एक साथ समावेश हो सकता है। अपना-अपना स्वतंत्र अस्तित्व रखते हुए वे एक साथ रहते हैं।

करणी बांझ न होय

जीव के दो प्रकार हैं–सिद्ध और संसारी। सिद्ध जीव अशरीर, अवाक् और अमन होते हैं। वे कृतकृत्य होते हैं। उन्हें क्रियात्मक रूप में कुछ भी करने की अपेक्षा भी नहीं होती और करने का वहाँ अवकाश भी नहीं होता। संसारी जीव शरीरधारी होते हैं। वे सर्वथा शरीरमुक्त कभी होते ही नहीं हैं। क्रिया वहीं होती है, जहाँ शरीर होता है। शरीर के बिना क्रिया हो ही नहीं सकती।

एक क्रिया संपन्न होने के बाद भी उसका प्रभाव कुछ समय तक आत्मा पर बना रहता है। इस प्रकार क्रियाकाल और प्रभावकाल–ये दो प्रकार के संसारी जीव से संबंधित काल हो जाते हैं। एक क्रिया संपन्न हो जाती है, परंतु उसका संस्कार पीछे छूट जाता है, आत्मा के साथ वह सम्बद्ध हो जाता है। बैल चला जाता है, किंतु उसका पद्चिह्न रह जाता है। उस संस्कार अथवा चिह्न को जैन पारिभाषिक शब्दावली में कर्म कहा जाता है। कर्म के कर्त्ता को उसका फल भी नियमानुसार मिलता है।

कर्म आठ हैं–(१) ज्ञानावरण, (२) दर्शनावरण, (३) अंतराय, (४) मोहनीय, (५) आयुष्य, (६) नाम, (७) गोत्र, (८) वेदनीय। इनमें प्रथम चार कर्म घाती और शेष चार कर्म अघाती कहलाते हैं। घाती कर्म आत्मगुणों (ज्ञान, दर्शन, अविकारता, शक्ति) का नाश अथवा घात (आच्छादन, अप्रकटन) करते हैं, इसलिए वे घाती एवं सर्वथा अशुभ कहलाते हैं। अघाती कर्म आत्मगुणों का नाश नहीं करते, इसलिए वे अघाती कहलाते हैं, वे केवल शुभ अथवा अशुभ रूप में फल देते हैं।

नव तत्त्वों में तीसरा तत्त्व पुण्य और चौथा तत्त्व पाप है। ये बंद्ध अवस्था में द्रव्य पुण्य-पाप तथा उदय-अवस्था में भाव पुण्य-पाप कहलाते हैं। आठ कर्मों में घाती कर्म केवल पाप कर्म होते हैं, अघाती कर्मों में प्रत्येक कर्म पुण्य और पाप दोनों प्रकार का होता है।

शुभ कर्म और अशुभ कर्म एक साथ एक ही समय में एक ही जीव के बंध सकते हैं। इसका हेतु अग्रलिखित है–आश्रव पाँच हैं–मिथ्यात्व, अविरति, प्रमाद, कषाय और योग। इनमें प्रथम चार आश्रव तो अशुभ ही होते हैं। उनसे अशुभ कर्मों का ही बंध होता है। योग आश्रव शुभ और अशुभ दोनों प्रकार का होता है। शुभ योग की विद्यमानता में निर्जरा के साथ पुण्यबंध होता है, यह तथ्य तो प्रसिद्ध है, किंतु उसी समय मिथ्यात्व आदि अन्य आश्रवों के कारण अशुभ कर्म का बंध भी होता है, यदि वे आश्रव रुद्ध नहीं हैं तो। एक सप्तम गुणस्थानवर्ती साधु अप्रमत्त अवस्था में ध्यानलीन है। उसके पुण्यबंध शुभयोग के कारण माना गया है, किंतु उसके उसी समय आश्रव के कारण पाप कर्म का बंध भी हो रहा है। दशम गुणस्थान में अशुभ कर्मों का बंध भी होता है। वहाँ ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय, वेदनीय, नाम, गोत्र और अंतराय–इन छह कर्मों का बंध होता है। कषाय आश्रव अशुभ कर्मों को आकृष्ट करता है। आश्रव की भिन्नता के कारण कर्म की भिन्नता भी संभव बन जाती है। शुभ योग के कारण शुभ नाम व उच्च गोत्र का बंध होता है और कषाय आस्रव से ज्ञानावरणीय आदि अशुभ कर्मों का बंध होता है। कोई व्यक्ति क्रियारूप में क्रोध करता है–मन में गुस्सा, वाणी में आक्षेपात्मक शब्द और आँखें लाल, भृकुटि तनी हुई, डरावना चेहरा–यह स्थिति बन जाती है। किंतु इस प्रकार की क्रिया कषाय आश्रव नहीं, योग आश्रव है। इस प्रकार की स्थिति छठे गुणस्थान के बाद नहीं बनती।

(क्रमशः)

अणुवत गीत महासंगान के आयोजन

पाली

अणुव्रत अमृत महोत्सव के उपलक्ष्य में अणुव्रत विश्व भारती सोसाइटी द्वारा अणुव्रत महासंगान का कार्यक्रम देश भर में आयोजित किया गया। अभातेयुप संभाग प्रमुख रोशन नाहर ने बताया कि तेयुप, पाली में लगभग ४० स्थान पर १८२६२ बच्चों, यात्रियों, स्टेशन मास्टर, कैदियों, नर्सिंग स्टूडेंट्स, टीचर्स, जैलर, प्रशासनिक अधिकारियों, कर्मचारियों, फैक्ट्री स्टॉफ और भी व्यक्तियों ने अणुव्रत गीत का संगान किया। अणुव्रत महासंगान की संयोजिका नूतनबाला कपिला, पुष्पा परिहार के साथ उनकी टीम एवं तेरापंथ सभा, तेममं ने हिस्सा लिया।

मुनि सुमित कुमार जी ने कहा कि नैतिकता और धार्मिक संस्कार से मनुष्य जन्म सफल होता है। धार्मिक होने से भी ज्यादा नैतिक होना मुश्किल और महत्त्वपूर्ण है। मुनिश्री ने इस गीत के हर एक बोल से मानवता का परिचय देते हुए कहा कि इस गीत की एक लाइन भी अगर हम अपने जीवन में उतारते हैं तो हम इंसानियत की राह पर आगे चलकर मनुष्य जन्म को सफल बनाने में और धर्म का आचरण करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं।

पाली जिले के लगभग ३० विद्यालयों, मदरसों, हॉस्पिटल, जेल, धार्मिक स्थल, उद्यान, रेलवे स्टेशन, फैक्ट्री एवं अन्य व्यावसायिक स्थान पर इसका गायन किया गया। कार्यक्रम में अध्यक्ष सुबुद्धि समदड़िया, सचिव प्रियंका चोपड़ा, कोषाध्यक्ष बसंत सोनी सहित ४० टीम ने इस कार्य को पूरा करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। कार्यक्रम में मांगीलाल तंवर, पीयूष चोपड़ा, चंद्रा खाटेड़, अजीत भाई कोहिनूर, डॉ० के०एम० शर्मा, विपिन बांठिया सहित अनेक गणमान्यजन उपस्थित रहे।

बैंगलुरु

तेयुप द्वारा अणुव्रत विश्व भारती सोसाइटी की स्थापना के ७५वें वर्ष अमृत महोत्सव के उपलक्ष्य में अणुव्रत गीत महासंगान कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कर्नाटक विधान सभा के सम्मुख हुई इस प्रस्तुति के दौरान तेयुप अध्यक्ष रजत बैद, निवर्तमान अध्यक्ष एवं कर्नाटक राज्य संयोजक प्रदीप चोपड़ा, पदाधिकारी, अणुव्रत समिति सहमंत्री प्रवीण बोहरा, संयोजक प्रसन्न धोका एवं कार्यसमिति सदस्यों की उपस्थिति रही।

लिलुआ

अणुव्रत समिति, हावड़ा के अंतर्गत तेयुप, लिलुआ ने अपने क्षेत्र लिलुआ, बेलुड़ और बाली में लिलुआ तेरापंथी सभा और बेलूड़-बाली तेरापंथी सभा के साथ सामूहिक संगान किया।

सभा अध्यक्ष शुभकरण दुगड़, तेयुप, लिलुआ अध्यक्ष संदीप दुधेड़िया सहित १५ श्रावकों की सहभागिता रही।

लिलुआ सभा में गीत का संगान किया गया। वहाँ के अध्यक्ष प्रमिल बाफना, तेयुप मंत्री दीपक बागरेचा सहित १६ श्रावक-श्राविकाओं की सहभागिता रही।

अमराईवाड़ी

तेयुप, अमराईवाड़ी द्वारा अणुव्रत गीत महासंगान के अंतर्गत ६ सेंटरों पर करीबन १८००० बच्चों ने भाग लिया।

अणुव्रत समिति, अहमदाबाद के अध्यक्ष प्रकाश धींग, सदस्य प्रकाश बैद के साथ तेयुप, अमराईवाड़ी ओढ़व के अध्यक्ष हितेश चपलोत एवं तेयुप मंत्री सुनील चिप्पड़, तेयुप कोषाध्यक्ष दिनेश टुकलिया, तेयुप कार्यकर्ता पिंटू दुगड़, संयोजक नरेंद्र दुगड़ एवं सभी साथियों के सहयोग से कार्यक्रम का सफल आयोजन हुआ।

✦ *शांतिमय जीवन का पहला व प्रमुख सूत्र है–ईमानदारी।*

– आचार्यश्री महाश्रमण

✦ अपराध व नियमातिक्रमण का एक कारण है अज्ञान। ज्ञान का प्रदीप अनेक समस्याओं का समाधान है।
आचार्य श्री महाश्रमण

ज्ञानशाला वार्षिकोत्सव का आयोजन

ज्ञानशाला है सद्संस्कारों का अक्षय कोष

दिल्ली।

अणुव्रत भवन, दिल्ली के प्रांगण में दिल्ली सभा के तत्त्वावधान में दो सत्रों में वार्षिकोत्सव का कार्यक्रम आयोजित हुआ। जिसमें प्रथम सत्र में १३ केंद्रों के ज्ञानार्थी बच्चों की संस्कारों से ओत-प्रोत प्रस्तुतियाँ आकर्षण का केंद्र रहीं। साध्वी अणिमाश्री जी और समणी नियोजिका जयंतप्रज्ञा जी का मंगल सान्निध्य दोनों सत्रों में प्राप्त हुआ।

साध्वीश्री जी ने अपने पाथेय में समय को पारस मणि की उपमा देते हुए ज्ञानार्थी बच्चों को एक कहानी के माध्यम से सीख दी। साध्वीश्री जी ने कहा कि ज्ञानशाला में आकर अगर समय का उपयोग करना सीख गए तो जिंदगी बदल जाएगी। उन्होंने बाल पीढ़ी को संस्कारों से संस्कारित करने में माताओं और प्रशिक्षिकाओं की अहम भूमिका बताते हुए प्रशिक्षिकाओं को उच्चारण शुद्धि पर विशेष बल देने को कहा। साध्वीश्री जी ने आगे कहा कि कृतज्ञता और दूसरों के गुणानुवाद का गुण जिसके भीतर रहता है वह स्वयं के विकासशीलता का रास्ता तय करता है। उन्होंने बच्चों को समझाने की शैली के गुर भी प्रशिक्षिकाओं को बताए।

इसी क्रम में समणी नियोजिका जयंतप्रज्ञा जी ने कहानी के माध्यम से बच्चों को गुणों की अभिवृद्धि का मंत्र दिया। कार्यक्रम का शुभारंभ साध्वीवृंद ने नमस्कार महामंत्र वाचन से किया। तत्पश्चात ज्ञानार्थियों ने ज्ञानशाला गीत से मंगलाचरण किया। दिल्ली ज्ञानशाला परामर्शक रतनलाल जैन ने आगंतुकों का स्वागत करते हुए भाव व्यक्त किए। दिल्ली सभा महामंत्री प्रमोद घोड़ावत और दिल्ली ज्ञानशाला संयोजक अशोक बैद ने ज्ञानशाला पदाधिकारियों के साथ साध्वीवृंद और समणीवृंद को प्रतिवेदन भेंट किया। अशोक बैद ने सत्र-२०२३ की गति-प्रगति का विवरण प्रतिवेदन वाचन कर प्रस्तुत किया।

इस वर्ष दिल्ली ज्ञानशाला में नए केंद्रों–वसुंधरा तथा पालम केंद्र का शुभारंभ विशेष उपलब्धि रही। १३ केंद्रों द्वारा क्रम से दी गई प्रस्तुतियों का आधार था, 'तेरापंथ के ग्यारह आचार्यों तथा नौ साध्वीप्रमुखाओं का जीवन वृत्त और गुणानुवाद'। अपनी प्रस्तुतियों में रोचकता लाते हुए चित्र, नुक्कड़ नाटक, कव्वाली, नृत्य नाटिका, कविता, गीतिका आदि अलग-अलग शैली और विधाओं में अपनी प्रस्तुति दी।

वार्षिकोत्सव के कार्यक्रम में गणमान्य अतिथियों और पदाधिकारियों की उपस्थिति विशेष उत्साह प्रदान करने वाली रही। विकास परिषद संयोजक अजात शत्रु व विशिष्ट श्रावक मांगीलाल सेठिया, अखिल भारतीय अणुव्रत न्यास के प्रभारी ट्रस्टी शांतिकुमार जैन और पूर्व मुख्य न्यासी संपत नाहटा, महासभा प्रतिनिधि कैलाश डूंगरवाल, दिल्ली सभा पूर्वाध्यक्ष गोविंद बाफना, महामंत्री प्रमोद घोड़ावत, उपाध्यक्ष बाबूलाल दुगड़, उपाध्यक्ष नत्थूराम जैन, कोषाध्यक्ष सुनील भंसाली, ज्ञानशाला केंद्रीय प्रकोष्ठ समिति सदस्य सरोज छाजेड़ सहित अनेक सभा-संस्थाओं के पदाधिकारीगण, सदस्यों एवं गणमान्यजनों की उपस्थिति रही। लगभग ६१० की उपस्थिति रही।

निर्मला, अनिल, रेखा, शगुन, श्रेय बैद परिवार द्वारा अर्थ सौजन्य प्रदान किया गया। प्रथम सत्र का संचालन रोहिणी केंद्र की ज्ञानार्थी मान्या जैन और मिष्टी जैन ने किया। आभार ज्ञापन सह-संयोजिका राजुल मनोत ने किया।

द्वितीय सत्र सम्मान सत्र के रूप में आयोजित किया गया। जिसमें सभी १३ ज्ञानशाला स्थलों के स्थान प्रदाताओं, ज्ञानशाला पदाधिकारियों, श्रेष्ठ ज्ञानार्थी, शत-प्रतिशत उपस्थिति वालों सहित सभी केंद्र पदाधिकारियों, ज्ञानशाला में ८० प्रतिशत व उससे अधिक उपस्थिति दर्ज कराने वाले सभी प्रशिक्षिकाओं, कार्यकर्ताओं को मोमेंटो प्रदान कर सम्मानित किया गया। शेष सभी को सार्टिफिकेट प्रदान किया गया। द्वितीय सत्र का संचालन सह-संयोजक बजरंग कुंडलिया और नवीन जैन द्वारा किया गया। इस सत्र का शुभारंभ साध्वीवृंद ने नवकार वाचन से किया। तत्पश्चात दिल्ली ज्ञानशाला संयोजक व उनकी टीम द्वारा मंगल संगान किया गया। साध्वी कर्णिकाश्री जी ने ज्ञानशाला को आशीर्वचन प्रदान किया।

दोनों सत्रों में सह-संयोजिका दीपिका नाहटा और राजुल मनोत ने पुरस्कार के साथ ज्ञानार्थियों, प्रशिक्षिकाओं और अभिभावकों से रोचक प्रश्नोत्तर पूछ सभी के उत्साह को द्विगुणित किया। आभार ज्ञापन सह-संयोजक पारस तातेड़ ने किया। कार्यक्रम के आयोजन में सूर्यनगर केंद्र, रोहिणी केंद्र, ओसवाल भवन केंद्र तथा गांधीनगर केंद्र के कार्यकर्ताओं, प्रशिक्षिकाओं का सहयोग प्राप्त हुआ।

सप्ताह के विशेष दिन

12 फरवरी, 2024 — भगवान विमलनाथ जन्म कल्याणक

13 फरवरी, 2024 — भगवान विमलनाथ दीक्षा कल्याणक

16 फरवरी, 2024 — 160वाँ मर्यादा महोत्सव

17 फरवरी, 2024 — भगवान अजितनाथ जन्म कल्याणक

18 फरवरी, 2024 — भगवान अजितनाथ दीक्षा कल्याणक

महिला मंडल के विविध आयोजन

सास-बहू कार्यशाला का आयोजन

बीदासर।

समाधि केंद्र व्यवस्थापिका साध्वी रचनाश्री जी के सान्निध्य में अभातेममं के निर्देशानुसार तेममं के तत्त्वावधान में सास-बहू कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस अवसर पर साध्वीश्री जी ने कहा कि व्यक्ति को अपने गुणों का विकास करना चाहिए। अच्छे गुणों को अपनाने से ही परिवार में खुशहाली आ सकती है। रिश्तों को मधुर बनाने के लिए तीन शब्दों को अपनाना होगा। पहला शब्द है–उम्मीद। सास और बहू दोनों में उम्मीद होती है। दूसरा शब्द है–प्रशंसा। सास-बहू अवगुण न खोजें, एक-दूसरे के गुणों को देखकर प्रशंसा करें। तीसरा शब्द है–तालमेल। एक-दूसरे में तालमेल बना रहे। इन तीन शब्द से रिश्तों को मजबूत बनाएँ और भविष्य को सुनहरा बनाएँ।

साध्वी गीतार्थप्रभा जी ने सास-बहू से कुछ रोचक प्रश्नोत्तर किए, जिसमें परिवार के विघटन का कारण बन रहे सास-बहू की टकराहट, असम्मान का भाव, जनरेशन गेप से बढ़ रही दूरी आदि पर सास, बहू दोनों ने अपने विचार रखे। भावना दुगड़ और अलका बांठिया ने साध्वी रचनाश्री जी द्वारा निर्मित लघु नाटिका की प्रस्तुति दी। कार्यक्रम का शुभारंभ महिला मंडल ने शासनमाता साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभा जी द्वारा रचित प्रेरणा गीत के द्वारा किया।

अस्पताल में बेंचों का वितरण कार्यक्रम

गंगाशहर।

अभातेममं के निर्देशन में 'स्वस्थ परिवार-स्वस्थ समाज' योजना के अंतर्गत महिला मंडल द्वारा सैटेलाइट अस्पताल में चार बेंच और १० डस्टबिन डॉ० वी०के० गांधी, चिकित्सालय सहप्रभारी, मोहनलाल मोदी नर्सिंग अधीक्षक, परमेश्वर सियाग गंगाशहर नागरिक परिषद के मंत्री, गौतम चौपड़ा, संपतलाल दुगड़, महेंद्र चौपड़ा, बच्छराज रांका, शिखरचंद संचेती आदि गणमान्य व्यक्तियों की उपस्थिति में भेंट किए गए।

महिला मंडल अध्यक्षा संजू लालानी ने बताया कि तेममं समय-समय पर धार्मिक कार्यक्रम के साथ सामाजिक कार्य करती रहती है। अस्पताल की ओर से जतन दुगड़ ने तेममं का आभार व्यक्त किया। मंत्री मीनाक्षी आंचलिया, सहमंत्री बिंदु छाजेड़, कार्यसमिति सदस्य कनक गोलछा, जयश्री डागा आदि उपस्थित रहे।

संथारा समाचार

असाड़ा, ईरोड।

श्राविका अंजू देवी की माताजी पुष्पा देवी भंसाली को गुरुदेव की आज्ञा से साध्वी गुप्तिप्रभा जी ने जोधपुर में लगभग १२:१५ बजे संथारे का प्रत्याख्यान करवाया और उसी दिन रात को लगभग ९:३० बजे के आसपास उनका संथारा असाड़ा में सीज गया। पुष्पा देवी एक सुदृढ़ श्राविका, सरलमना, शांत स्वभावी, कर्तव्यनिष्ठ, उदारमना, संत समागम व सेवा भावना से ओत-प्रोत, करुणा व ममता की सजग मूर्ति थी।

उनके निवास स्थान से बैकुंठ यात्रा प्रारंभ कर मुक्तिधाम तक संपन्न की गई। समणी डॉ० मंजूप्रज्ञा जी, समणी स्वर्णप्रज्ञा जी के सान्निध्य में असाड़ा तेरापंथ भवन में उनकी स्मृति सभा का आयोजन किया गया। जिसमें पूज्य गुरुदेव से प्राप्त संदेश का वाचन किया गया। साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभा जी से प्राप्त, साध्वी गुप्तिप्रभा जी, साध्वी कुसुमलता जी, साध्वी मौलिकयशा जी, साध्वी भावितयशा जी, साध्वी मंजुलयशा जी से प्राप्त संदेशों का वाचन किया गया। परिवार की ओर से जवाहरलाल भंसाली, महावीर सालेचा, पिंकी भंसाली, संतोष सिंघवी, महेंद्र भंसाली, धनराज भंसाली आदि ने अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की। समणी डॉ० मंजूप्रज्ञा जी ने संथारे का महत्त्व बताते हुए मृत्यु को महोत्सव बनाने की दिशा में उद्बोधन दिया। कार्यक्रम का संचालन मुमुक्षु बहन अंजली बाई ने किया।

अमृतमय कार्यशाला का आयोजन

लिलुआ।

मुनि जिनेश कुमार जी के सान्निध्य में तेरापंथ किशोर मंडल, पूर्वांचल और उत्तर हावड़ा द्वारा आयोजित 'अमृतमय कार्यशाला' में ६ किशोरों ने अपनी सहभागिता दर्ज कराई। सहप्रभारी जय बांठिया, सह-संयोजक कुणाल चोपड़ा, मोहित बच्छावत, देवांग छाजेड़, हार्दिक कुंडलिया और हर्षित कुंडलिया ने कार्यक्रम में भाग लिया।

कार्यक्रम तीन भागों में संपादित किया गया। जिज्ञासा जंक्शन, ट्रेजर हंट और किशोर कनेक्ट। सभी भागों में लिलुआ के किशोरों ने अच्छा प्रदर्शन किया तथा कुल पाँच पुरस्कारों में से दो पुरस्कार अपने नाम किए।

अणुव्रत गीत महासंगान के विविध आयोजन

जोधपुर

अणुव्रत विश्व भारती सोसाइटी के तत्त्वावधान में अभातेयुप के सहयोग से तेयुप, सरदारपुरा द्वारा अणुव्रत गीत महासंगान का आयोजन जोधपुर के मुख्य शिक्षण संस्थानों के साथ-साथ विभिन्न स्थानों पर किया गया। पाल रोड स्थित डीपीएस पब्लिक स्कूल, सरदारपुरा स्थित सरदार दून पब्लिक स्कूल, संस्कार इंटरनेशनल स्कूल, एम०पी०एस० स्कूल, सिवांची गेट स्थित बालक व बालिका विद्यालय, मोर्डन स्कूल, चौपासनी स्थित महात्मा गांधी स्कूल, बादल चंद सुगन चंद चोरड़िया बालिका विद्यालय आदि में हजारों विद्यार्थियों द्वारा अणुव्रत गीत का संगान किया गया।

अणुव्रत समिति से सुधा भंसाली ने बताया कि बासनी स्थित ए०सी०एन एक्सपोर्ट व राजलक्ष्मी स्टील पाल रोड स्थित अपना घर आश्रम आदि में भी कार्मिकों व निवासियों ने भी तेयुप, सरदारपुरा के सदस्यों के नेतृत्व में इस गीत का संगान किया गया। तेयुप मंत्री मिलन बांठिया, सहमंत्री धीरज बैंगानी, नरेंद्र सेठिया, निहाल बैद, सौरभ बाफना के साथ महासभा से विजयराज मेहता, सभा, सरदारपुरा से सुरेश जीरावला, नवरतन मल बैद, तेमम आदि का कार्यक्रम को सफल बनाने में सहयोग रहा।

राजाजीनगर

अणुव्रत विश्व भारती सोसाइटी एवं अभातेयुप के निर्देशन में तेयुप राजाजीनगर द्वारा अणुव्रत गीत महासंगान का आयोजन किया गया। इस अवसर पर तेयुप ने तुलसी चेतना केंद्र से महासंगान का शुभारंभ किया। इस संपूर्ण आयोजन में कुल १३३० सदस्यों ने अपनी सहभागिता दर्ज की।

स्कूलीय कार्यक्रम में तेयुप अध्यक्ष कमलेश गन्ना एवं तेयुप परामर्शक चंद्रेश मांडोत ने अपने विचार व्यक्त किए एवं बच्चों को अणुव्रत गीत का सारांश से समझाया। इस अवसर पर तेरापंथ सभा से अध्यक्ष रोशनलाल कोठारी एवं सभा टीम, महिला मंडल अध्यक्षा उषा चौधरी एवं टीम, तेयुप प्रबंध मंडल एवं सदस्यों की अच्छी उपस्थिति रही।

बीदासर

अणुव्रत विश्व भारती सोसाइटी के तत्त्वावधान में अणुव्रत गीत महासंगान का आयोजन अणुव्रत समिति, बीदासर द्वारा तहसील के विभिन्न राजकीय/निजी विद्यालयों एवं कार्यालयों में किया गया। अणुव्रत समिति के मंत्री नवल किशोर मीणा ने बताया कि कार्यक्रम की शुरुआत साध्वी रचनाश्री जी के सान्निध्य में अणुव्रत गीत महासंगान के संयोजक नवदीप द्वारा की गई। तत्पश्चात स्वागत भाषण महावीर बैद, उपाध्यक्ष अणुव्रत समिति बीदासर, आभार ज्ञापन उपाध्यक्ष अणुव्रत समिति दानमल बांठिया ने किया। कार्यक्रम का संयोजन तेमम मंत्री भावना दुगड़ द्वारा किया गया।

इस अवसर पर शासनश्री साध्वी यशोमती जी ने भारत की संस्कृति में ऋषि-मुनियों के त्याग एवं साधनामय जीवन के योगदान के बारे में बताया। केंद्र व्यवस्थापिका साध्वी रचनाश्री जी ने कहा कि अणुव्रत आंदोलन विश्व संत आचार्यश्री तुलसी द्वारा आजादी के समय दिया गया अवदान है।

इस अवसर पर तेयुप के अध्यक्ष अंकित बैंगानी, मंत्री पारस बैद, तेरापंथ सभा के कोषाध्यक्ष विमल लिंगा, महिला मंडल अध्यक्ष मंजू बोथरा एवं अणुव्रत समिति के कोषाध्यक्ष विकास गिड़िया सहित विभिन्न राजकीय एवं निजी शिक्षण संस्थाओं के अध्यापकों व छात्र-छात्राओं की उपस्थिति रही।

नोखा

नोखा तहसील के १०० से अधिक विद्यालय में करीब २५००० से अधिक छात्र-छात्राओं एवं अभिभावकों ने एक ही दिन में अणुव्रत गीत गया। तेरापंथ सभा भवन में शासन गौरव साध्वी राजिमती जी के सान्निध्य में इस गीत का संगान किया गया। इस अवसर पर साध्वी राजीमती जी ने कहा कि छोटे-छोटे प्रयास से जीवन संयम में हो सकता है। उनका व्यसनमुक्त, संप्रदाय मुक्त जीन बने। अणुव्रत का एक ही लक्ष्य है कि व्यक्ति व्यक्ति बने। उन्होंने आह्वान किया कि आज के दिन सभी को कम से कम एक संकल्प लेना चाहिए।

साध्वी प्रभातप्रभा जी ने कहा कि बाहरी आडंबर, प्रदर्शन दिखावा को छोड़कर संयमपूर्वक जीवन जीना श्रेष्ठकर होगा। अणुव्रत प्रत्येक मानव को मानव बनाने की प्रेरणा देता है। इस अवसर पर नगरपालिका उपाध्यक्ष निर्मल भूरा, उपकोष अधिकारी रमेश व्यास, इंदरचंद मोदी, तेरापंथ सभा के अध्यक्ष इंदरचंद बैद, अणुव्रत समिति के अध्यक्ष मनोज घीया, महिला मंडल अध्यक्ष सुमन मरोठी, ओमप्रकाश विश्नोई आदि ने भी विचार रखे।

अणुव्रत समिति के सदस्य, तेरापंथ सभा, महिला मंडल, तेयुप, किशोर मंडल के कार्यकर्ता भी उपस्थित थे। हंसराज भूरा, अरुण, सुरेश बोथरा, महावीर नाहटा आदि ने व्यवस्थाएँ संभाली।

मलाड़ (मुंबई)

अणुविभा के अंतर्गत आयोजित अणुव्रत गीत महासंगान का कार्यक्रम मालाड़ की टोपीवाला बीएमसी स्कूल में किया गया। स्कूल प्रिंसिपल रामपाल के साथ ही अन्य अध्यापकगण एवं लगभग ४०० बच्चों ने अणुव्रत गीत का संगान किया।

मुंबई अणुव्रत टीम से हेमलता सोनी, पुष्पा सोलंकी मालाड़ क्षेत्रीय संयोजक अजय डांगी, सह-संयोजिका अरुणा चोरड़िया, विद्या मेहता, मुंबई महिला मंडल मंत्री संगीता चपलोत, सभा अध्यक्ष इंद्रमल कच्छारा, मंत्री हस्तीमल भंडारी, तेयुप अध्यक्ष पैलेस मेहता आदि अनेक गणमान्यजनों की उपस्थिति रही।

हावड़ा

अणुविभा द्वारा अणुव्रत गीत महासंगान का आयोजन अणुव्रत समिति, हावड़ा द्वारा किया गया। कार्यक्रम में तेयुप, हिंदमोटर, लिलुआ, उत्तर हावड़ा, साउथ हावड़ा की विशेष भूमिका रही। हावड़ा के रिसड़ा, हिंदमोटर उत्तरपाड़ा, बेलूर बाली, लिलुआ, उत्तर हावड़ा, साउथ हावड़ा की सभी सभा, महिला मंडल, टीपीएफ, ज्ञानशाला एवं विभिन्न कॉम्प्लेक्स में पूरे आयोजित किया गया।

कार्यक्रम में अणुव्रत समिति के अध्यक्ष दीपक नखत, उपाध्यक्ष एवं प्रभारी मनीष कुमार बैद, उपाध्यक्ष रंजीत सिंह बैद, मंत्री बिरेंद्र बोहरा सहित अनेक गणमान्यजन उपस्थित थे। अणुव्रत समिति हावड़ा द्वारा लगभग २५ स्कूलों, जैन हॉस्पिटल, गंगा आरती घाट एवं अनाथ आश्रमों जैसे प्रतिष्ठित स्थानों में भी कार्यक्रम को संपादित किया गया। लगभग ११३ जगहों में ५६००० से अधिक संगान हुआ।

रामसरा बाईपास

रामसरा बाईपास स्थित होटल दुबई डेजर्ट में अणुव्रत गीत संगान किया गया। कार्यक्रम में झूमरमल कोठारी, समिति अध्यक्ष रचना कोठारी, कोषाध्यक्ष लक्ष्मी कोठारी, मंत्री ताहिर खान, एडवोकेट, अजय दफ्तरी, पायल दफ्तरी, महावीर प्रसाद लखेरा, शशि कोठारी, सरगम कोठारी, अनु बांठिया, राजश्री कोठारी, संगीता कोठारी, राजश्री सिंघी आदि उपस्थित थे।

चुरू

युक्ति संस्थान/ महिला मदरसा, चुरू में लगभग १२० मुस्लिम महिलाओं के साथ अणुव्रत गीत महासंगान का आयोजन हुआ। अध्यक्ष रचना कोठारी, कोषाध्यक्ष लक्ष्मी कोठारी, मंत्री ताहिर खान, एडवोकेट, रमेश सोनी, संजय खान, सलीम खान, राजकौर राहड़, पूजा सोनी आदि उपस्थित थे।

जीवन की सफलता की कुंजी नीतियों और विचारों में निहित

चंडीगढ़।

जीवन की सफलता की कुंजी नीतियों और विचारों में निहित होती है, इन्हें जिस किसी ने भी अपने जीवन में उतार लिया तो वो किसी भी मुसीबत का डटकर सामना कर सकता है। एक अकेला पहिया नहीं चल सकता। इसका अर्थ है कि बिना किसी सहयोग के कोई भी काम नहीं किया जा सकता। यह विचार मुनि विनय कुमार जी 'आलोक' ने अणुव्रत भवन में सभा को संबोधित करते हुए व्यक्त किए।

मुनिश्री ने आगे कहा कि गलतफहमी किसी काँटे की तरह होती है। आदमी जब गलतफहमी का शिकार होने लगता है, तो रिश्ते की मधुरता व प्यार को नफरत में बदलते देर नहीं लगती। ऐसे में अपने रिश्ते को टूटने से बचाने का प्रयास करें।

स्वस्थ, सुखी संग्रहित एवं संस्कारी परिवार का निर्माण प्रत्येक महिला की पहली जिम्मेदारी

छोटी खादू।

साध्वी संघप्रभा जी के सान्निध्य में परिवार संचालन कार्यशाला जिसका विषय–'मेरा परिवार-मेरी जिम्मेदारी' अभातेमम के निर्देशन में एवं स्थानीय तेमम द्वारा आयोजित किया गया। कार्यक्रम का मंगलाचरण किरण देवी धारीवाल द्वारा सुमधुर गीतिका से किया गया। साध्वी संघप्रभा जी ने कहा कि जो स्वयं के प्रति जिम्मेदार नहीं होता वह कभी भी परिवार के प्रति भी सही ढंग से जिम्मेदारी नहीं निभा सकता।

एक महिला के लिए सर्वप्रथम इस चिंतन की आवश्यकता है कि वह कैसे परिवार को स्वस्थ, स्वावलंबी, सुखी, समृद्ध संस्कार संपन्न व संगठित बनाए रख सकती है, अपेक्षा है हर महिला अपने समय व शक्ति का नियोजन कुशलतापूर्वक हर पीढ़ी को आगे बढ़ा सकती है।

साध्वी प्रांशुप्रभा जी ने कहा कि अनाग्रह, विनम्रता सहित आपसी प्रेम, कृतज्ञता, सेवा-भावना, सहयोग आदि गुणों से परिवार सुखी और संगठित रह सकता है। सुनीता देवी बेताला, स्तवना बेताला ने अपने वक्तव्य के द्वारा अपनी भाव अभिव्यक्ति दी। साध्वी प्राज्ञप्रभा जी ने सुमधुर गीत प्रस्तुत किया। कार्यक्रम का संचालन महिला मंडल की अध्यक्ष श्वेता भंडारी ने किया।

✦ मानव जीवन दुर्लभ होता है। जीवन जीना सामान्य बात है, विशेषतासंपन्न जीवन जीना विशेष बात है।
आचार्य श्री महाश्रमण

किशोर ग्रांड फिएस्टा का आयोजन

सूरत।

तेरापंथ किशोर मंडल, सूरत द्वारा तेरापंथ भवन मैत्री हॉल में केजीएफ रिटर्न किशोर ग्रांड फिएस्टा फन फेयर का आयोजन किया गया। जिसका उद्घाटन जैन संस्कार विधि से अभातेयुप राष्ट्रीय संगठन मंत्री अमित सेठिया द्वारा किया गया। अभातेयुप साथियों की उपस्थिति रही। १७ फूड स्टॉल और ७ गेम्स काउंटर के साथ लोगों के आकर्षण के लिए सेल्फी प्वाइंट, फोटो सेशन प्वाइंट और छोटे बच्चों के लिए जंपिंग का आयोजन किया गया।

किशोर मंडल सदस्य विश्रुत पारीख ने सिंगिंग के द्वारा अपना टैलेंट प्रस्तुत किया। अलग-अलग मैजिक शो किया गया। एंकर आस्था जैन ने विभिन्न गेम द्वारा आए हुए लोगों का मनोरंजन किया।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि विजय सिंह गुजर डीसीपी जोन-४ रहे। विजय सिंह ने अपने विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम के थीम प्रायोजक महावीर गोल्ड द्वारा पधारे हुए सभी को नशामुक्ति की शपथ दिलाई। कार्यक्रम में सभी सभा संस्था के पदाधिकारीगण उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन किशोर मंडल संयोजक धैर्य गोठी, सहसंयोजक प्रथम संकलेचा, मुदित आंचलिया, प्रिंस गांधी एवं एंकर आस्था जैन के द्वारा किया गया। आभार ज्ञापन किशोर मंडल सह-संयोजक प्रथम संकलेचा ने किया।

ज्ञानशाला ज्ञानार्थी परीक्षा का आयोजन

उदयपुर।

तेरापंथी सभा, ज्ञानशाला उदयपुर द्वारा ज्ञानशाला ज्ञानार्थी परीक्षा का आयोजन स्थानीय महिला अहिंसा प्रशिक्षण केंद्र में किया गया। मुनि सिद्धप्रज्ञ जी के मंगलपाठ से कार्यक्रम की शुरुआत हुई। लिफाफा सभाध्यक्ष अर्जुन खोखावत ने तीनों स्थानीय संस्थाओं के अध्यक्ष-मंत्री, प्रशिक्षिकाओं एवं ज्ञानार्थियों की उपस्थिति में खोला।

ज्ञानशाला ज्ञानार्थी परीक्षा का आयोजन परीक्षा केंद्र व्यवस्थापक प्रतिभा इंटोदिया द्वारा एसएसबी-१ के तीन ग्रुप, एसएसबी-२ के तीन ग्रुप, एसएसबी-३ के दो ग्रुप, एसएसबी-४ का एक ग्रुप एवं एसएसबी-५ के दो ग्रुप बनाकर किया गया।

शिशु संस्कार भाग-१ में कुल २८ ज्ञानार्थियों ने परीक्षा दी। जिसमें से एक बच्चे ने राजनगर ज्ञानशाला में परीक्षा दी एवं ज्ञानार्थी की परीक्षा अमेरिका से ऑनलाइन ली गई। शिशु संस्कार भाग-२ में १६ बच्चों ने परीक्षा दी। जिसमें से एक ज्ञानार्थी ने गंगापुर ज्ञानशाला में परीक्षा दी। शिशु संस्कार भाग-३ में ११ बच्चों की परीक्षा ली गई। शिशु संस्कार भाग-४ में ८ बच्चों की परीक्षा ली गई। शिशु संस्कार बोध भाग-५ में ११ बच्चों की परीक्षा ली गई एवं साउथ दिल्ली के एक बच्चे की परीक्षा ली गई। २६ प्रशिक्षिकाओं ने ७८ ज्ञानार्थियों की परीक्षा नियत समय अवधि में पूर्ण की।

इस अवसर पर सभा मंत्री विनोद कच्छारा, तेयुप अध्यक्ष विक्रम पगारिया, मंत्री भूपेश खमेसरा, महिला मंडल अध्यक्षा सीमा बाबेल, मंत्री ज्योति कच्छारा, नियोजक मंडल के तेयुप सदस्य अजीत छाजेड़, ज्ञानशाला संयोजिका सुनीता बैंगानी सहित अनेक गणमान्यजन उपस्थित रहे। सभी अभिभावकों, प्रशिक्षिकाओं एवं बच्चों के संयुक्त प्रयत्नों ने ज्ञानशाला ज्ञानार्थी परीक्षा के आयोजन को सफल बनाया।

गणतंत्र दिवस पर विविध कार्यक्रमों के आयोजन

राजाजीनगर

तेयुप के तत्त्वावधान में राउंड ईयर ह्यूमैनिटी थीम रक्तदान-२०२४ के अंतर्गत ७४वें गणतंत्र दिवस पर रक्तदान शिविर का आयोजन महावीर डिजायर, चिक्कबाणावार में किया गया।

रक्तदान शिविर की शुरुआत सामूहिक नमस्कार महामंत्र के उच्चारण से की गई। शिविर में रक्तदान हेतु पधारे स्थानीय लोगों ने मानव सेवा के क्षेत्र में रक्तदान शिविर का आयोजन उपयोगी बताया। ब्लड बैंक के सहयोग से कुल २० यूनिट रक्त का संग्रह हुआ। ब्लड बैंक के परिवार को सम्मानित करते हुए धन्यवाद व्यक्त किया।

तेयुप, राजाजीनगर अध्यक्ष कमलेश गन्ना ने सभी का आभार ज्ञापन किया। शिविर के व्यवस्थित आयोजन में एमबीडीडी प्रभारी सुनील मेहता, संयोजक विनोद कोठारी, चेतन मांडोत का श्रम रहा। किशोर मंडल से दीपक कटारिया, दर्शन पोरवाड़ एवं ध्रुव संचेती की उपस्थिति रही।

हैदराबाद

गणतंत्र दिवस के अवसर पर कन्या सुरक्षा सर्कल एवं स्तंभ पर महिला मंडल व कन्या मंडलकी बहनों ने ध्वजारोहण किया।

गवर्नमेंट हाई स्कूल, बोलाराम में ध्वजारोहण का कार्यक्रम रखा गया। महिला मंडल ने ध्वजारोहण किया व राष्ट्रगान का संगान किया तथा परेड को सलामी दी। लगभग ३५० बच्चों की उपस्थिति रही। बच्चों ने रंगारंग कार्यक्रम प्रस्तुत किया। उपाध्यक्ष अंजू चोरड़िया ने सभी को गणतंत्र दिवस की शुभकामनाएँ दी।

महिला मंडल द्वारा बच्चों को बिस्किट वितरण किए गए। कार्यक्रम में कन्या प्रभारी शीतल कोठारी, सरला मेहता, सरिता डागा, ममता बैद, संगीता सुराणा, स्नेहा बांठिया, दमयंती सुराणा उपस्थित रहे। कार्यक्रम में अनिल कातरेला का सहयोग रहा।

सरदारपुरा

गणतंत्र दिवस के उपलक्ष्य में अभातेमम के निर्देशन में तेमम द्वारा कन्या सुरक्षा सर्कल व स्तंभ पर ध्वजारोहण का कार्यक्रम आयोजित किया गया। राष्ट्रगान के साथ ध्वजारोहण किया गया।

उसके बाद साध्वी कुंदनप्रभा जी के सान्निध्य में कमला नगर हॉस्पिटल के पास ध्वजारोहण किया गया। महिला मंडल की बहनों के साथ-साथ तेरापंथी सभा, तेयुप, सरदारपुरा, कन्या मंडल से अच्छी उपस्थिति रही।

ब्लड डोनेशन ड्राइव का आयोजन

सूरत।

अभातेयुप के तत्त्वावधान में तेयुप, सूरत द्वारा ब्लड डोनेशन कैंप का आयोजन किया गया। नवकार महामंत्र से कैंप की शुरुआत की गई। रक्तदाता के सहयोग से ८७ यूनिट ब्लड एकत्रित हुआ। ब्लड एकत्रित करने के लिए स्मीमेंर ब्लड बैंक की टीम का सहयोग प्राप्त हुआ। कैंप में अभातेयुप संगठन मंत्री अमित सेठिया, एमबीडीडी राष्ट्रीय सहप्रभारी सौरभ पटावरी, एमबीडीडी गुजरात कोर्डिनेटर अभिनंदन गादिया एवं अभातेयुप साथियों की उपस्थिति रही।

अध्यक्ष, उपाध्यक्ष-प्रथम और मंत्री ने भी शिविर में रक्तदान किया। इस कैंप को सफल बनाने में पदाधिकारी टीम एमबीडीडी टीम एवं तेयुप कार्यकर्ताओं का श्रम रहा।

इस ब्लड कैंप में टेबल टॉक और स्वामी विवेकानंद नेत्र मंदिर अस्पताल का भी सहयोग प्राप्त हुआ। तेयुप अध्यक्ष सचिन चंडालिया ने सभी का स्वागत किया। आभार ज्ञापन मंत्री श्रेयांस सिरोहिया ने किया।

नि:शुल्क स्वास्थ्य जाँच शिविर का आयोजन

राजाजीनगर।

तेयुप, राजाजीनगर द्वारा संचालित आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर श्रीरामपुरम में नि:शुल्क स्वास्थ्य जाँच शिविर का आयोजन किया गया। शिविर का शुभारंभ नमस्कार महामंत्र के उच्चारण से हुई।

स्वास्थ्य शिविर के अंतर्गत रैंडम ब्लड शुगर, रक्तचाप जाँच, दंत परीक्षण एवं चिकित्सक परामर्श किए गए। शिविर में कुल ३८ सदस्य लाभान्वित हुए। इस शिविर के व्यवस्थित आयोजन करने में एटीडीसी स्टाफ स्मिता, श्यामला एवं दीपाश्री का सहयोग रहा। तेयुप अध्यक्ष कमलेश गन्ना, कमलेश चोरड़िया, जयंतीलाल गांधी एवं ललित मुणोत ने अपनी सेवाएँ प्रदान की।

'मेक योर मार्क' कार्यशाला का आयोजन

सूरत।

अभातेयुप के तत्त्वावधान में तेयुप, सूरत द्वारा आयोजित व्यक्तित्व विकास कार्यशाला के अंतर्गत मेक योर मार्क कार्यक्रम का समापन समारोह अभातेयुप राष्ट्रीय उपाध्यक्ष जयेश मेहता की अध्यक्षता में हुआ। कार्यशाला में सीपीएस के मुख्य ट्रेनर अवरिंद मांडोत द्वारा जीवन को सही मायने में जीने के गूढ़ रहस्यों को विस्तार से बताया। नेशनल ट्रेनर बबिता रायसोनी, अभातेयुप संगठन मंत्री अमित सेठिया, गुजरात संभाग प्रमुख कुलदीप कोठारी, अभातेयुप सदस्य, जेटीएन संपादक पवन फुलफगर उपस्थित रहे।

प्रायोजक परिवार के रूप में सुयश आर्ट फेब एवं विभोर क्रिएशन का आभार व्यक्त किया गया।

तेयुप, सूरत अध्यक्ष सचिन चंडालिया, मंत्री श्रेयांस सिरोहिया, तेयुप पदाधिकारी, कार्यकर्ता, अभातेयुप सीपीएस स्थानी ट्रेनर्स, पी०डी०डब्ल्यू० टीम तथा कार्यशाला में ३८ संभागियों ने भाग लिया। आभार ज्ञापन तेयुप मंत्री श्रेयांस सिरोहिया ने किया।

✦ *श्रद्धा का मतलब यह नहीं है कि तुम गलत बात को पकड़ने के बाद उसे छोड़ो ही नहीं। श्रद्धा यह रखो कि मैं गलत लगने वाली बात को छोड़ भी सकता हूँ।*

✦ *तुम दूसरों को किस प्रकार प्रभावित करते हो, मुझे यह मत बताओ। मुझे तो यह बताओ तुमने अपने आपको प्रभावित करना सीखा या नहीं?*

– आचार्यश्री महाश्रमण

अध्यात्म की भूमिका में अहिंसा शुद्ध धर्म है : आचार्यश्री महाश्रमण

बदलापुर, २४ जनवरी, २०२४

अणुव्रत यात्रा प्रणेता आचार्यश्री महाश्रमण जी अपनी धवल सेना के साथ आज बदलापुर पधारे। जन मानस की दशा और दिशा को बदलने वाले आचार्यश्री महाश्रमण जी ने पावन पाथेय प्रदान करते हुए फरमाया कि अहिंसा एक धर्म है। साधुओं के लिए अहिंसा तो सर्वप्राणातिपात विरमण के रूप में एक महाव्रत है। जो आत्मा में विश्वास करने वाले हैं, कर्मवाद को मानने वाले हैं, पुनर्जन्म को मानने वाले हैं, उनके लिए अहिंसा एक आत्मिक और आत्मकल्याण से संबंधित धर्म होता है।

अहिंसा एक नीति भी है। राजनीति, विदेश नीति भी अहिंसा से भावित हो सकती है। सहअस्तित्व, धर्म और पंथ निरपेक्षता भी अहिंसा से अनुस्यूत है। कोई भी जाति या धर्म को मानने वाला उच्च पद पर आसीन हो सकता है। यह भी एक समानता और अहिंसा की बात है। व्यक्ति स्वतंत्र है पर स्वतंत्रता में स्वच्छंदता नहीं आनी चाहिए। लोकतांत्रिक प्रणाली में अहिंसा एक नीति के रूप में है। चलाकर पर-राष्ट्र पर आक्रमण नहीं करना भी अहिंसा है। धर्म भी नीतिगत हो। अनेक नीतियों से अहिंसा को देखा जा सकता है।

धर्म और नीति से एक विचारणीय विषय बन सकता है कि हिंसा को व्यर्थ में काम में क्यों लें। अहिंसा का साध्य और साधन निर्मल होना चाहिए। हिंसा में भी साध्य सही होना चाहिए। साधु का धर्म तो सहन करना होता है। वे तो अहिंसा के पुजारी हैं। प्रशासन की बात अलग है। पर वहाँ पर भी चलाकर हिंसा न हो।

अध्यात्म की भूमिका में अहिंसा शुद्ध धर्म है। साधु अहिंसात्मक सुरक्षा कर सकता है, हिंसात्मक प्रतिकार साधु नहीं कर सकता। अहिंसा राजनीति-कूटनीति के हिसाब से भी हो सकती है।

पौष शुक्ला चतुर्दशी के अवसर पर पूज्यप्रवर ने हाजरी का वाचन कराते हुए प्रेरणाएँ प्रदान करवाई। रात्रि भोजन विरमण व्रत अहिंसा का अंग है। सूर्यास्त से सूर्योदय तक तो साधु अन्य कार्यों से मुक्त होता है। अपनी धर्माराधना आराम से कर सकता है। स्वास्थ्य की दृष्टि से भी यह व्रत अनुकूल है। हमारी मौलिक मर्यादाएँ हैं–

- सर्व साधु-साध्वियाँ एक आचार्य की आज्ञा में रहें।
- विहार, चातुर्मास आचार्य की आज्ञा से करें।
- अपना-अपना शिष्य-शिष्याएँ न बनाएँ।
- आचार्य भी योग्य व्यक्ति को दीक्षित करे, दीक्षित करने पर भी कोई अयोग्य निकले तो उसे गण से अलग कर दें।
- आचार्य अपने गुरुभाई या शिष्य को अपना उत्तराधिकारी चुने उसे सब साधु-साध्वियाँ सहर्ष स्वीकार करें।

ये मर्यादाएँ हमारे संगठन के स्तंभ समान हैं। हमारा सैद्धांतिक पक्ष है–

- त्याग धर्म, भोग अधर्म। व्रत धर्म, अव्रत अधर्म।
- असंयति के जीने की वांछा करना राग, मरने की वांछा करना द्वेष, संसार समुद्र से उसके तरने की वांछा करना वीतराग देव का धर्म है।

इस प्रकार हमारे धर्मसंघ में त्याग और व्रत को महत्त्व दिया गया है।

साधु का जीवन बहुत ऊँचा जीवन है, वह किसी भाग्यशाली को ही मिल सकता है। साधु को अपना साधुत्व, संघ और गुरु प्यारा होना चाहिए।

साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभा जी ने कहा कि धर्म का मूल स्रोत है आत्मा, जिसने आत्मा को जान लिया उसने सब कुछ जान लिया। हमें आत्मा को जानकर परमात्मा तक पहुँचना है। जब तक सही मार्गदर्शक उपलब्ध नहीं होता तब तक हम आत्मा को भी नहीं पहचान पाते, तो परमात्मा तो बहुत दूर का विषय हो जाता है। हमारा ईश्वर तो अनंत ज्ञान, अनंत दर्शन और अनंत आनंद स्वरूप है। हमें उस ईश्वर की खोज करनी है और वहाँ तक जाना है। गुरु हमारे मार्गदर्शक होते हैं, हमारी ज्ञान चेतना को जगाने वाले होते हैं। जिससे हम वहाँ पहुँच सकते हैं। बिना ज्ञान या विज्ञान से मोक्ष प्राप्त नहीं हो सकता है। गुरु हमें ज्ञान-विज्ञान प्रदान कराने वाले होते हैं।

पूज्यप्रवर के अभिनंदन में तेरापंथ महिला मंडल, स्थानीय सभाध्यक्ष भैरूलाल पगारिया, जैन समाज से सुबोध परमार, मूर्तिपूजक संघ से राजेश खाटेड़ ने ने अपनी भावना अभिव्यक्त की। ज्ञानशाला की सुंदर प्रस्तुति हुई। संत सेवा मंडल, बदलापुर के कार्यकर्ताओं ने पूज्यप्रवर से नशामुक्ति का संकल्प लिया। तेरापंथ समाज की भी प्रस्तुति हुई। तेयुप एवं महिला मंडल के सदस्यों ने गीत का संगान किया।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

कॉन्फिडेंट पब्लिक स्पीकिंग कार्यशाला का आयोजन

बैंगलुरु।

अभातेयुप के तत्त्वावधान में तेयुप, बैंगलुरु द्वारा सप्त दिवसीय सीपीएस कार्यशाला का शुभारंभ नमस्कार महामंत्र के सामूहिक उच्चारण के साथ तेरापंथ भवन, गांधीनगर में किया गया। तेयुप अध्यक्ष रजत बैद ने उपस्थित ट्रेनर्स, गणमान्य व्यक्तियों एवं संभागियों का स्वागत किया। मंत्री रोहित कोठारी ने अहमदाबाद से समागत जोनल ट्रेनर सुरभि शाह का परिचय प्रस्तुत किया।

ट्रेनर शाह ने सीपीएस की जानकारी देते हुए कहा कि सीपीएस दुनिया का सबसे बड़ा डर माना जाता है और डर को हमें निडर होकर दूर करना है। आपने कहा कि सही वेशभूषा, मुद्रा, हाव-भाव, भाषाशैली आदि के द्वारा व्यक्ति अपनी वक्तव्य कला में निखार ला सकता है। आपने विभिन्न सूत्रों और प्रयोगों के द्वारा वक्तव्य कला का प्रशिक्षण दिया।

कार्यक्रम में सीपीएस के राष्ट्रीय प्रभारी दिनेश मरोठी, सलाहकार सतीश पोरवाड़, चीफ ट्रेनर अरविंद मांडोत, नेशनल ट्रेनर विनय बैद, परिषद पदाधिकारी, कार्यकर्ता एवं संभागी उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन संयोजक आदित्य मांडोत ने किया।

रक्तदान शिविर का आयोजन

हुबली।

एमबीडीडी रिदम-२०२४ के अंतर्गत रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया, जिसमें ५७ यूनिट का कलेक्शन हुआ। प्रमोद विकांशी, राजीव विकांशी एवं जया मैडम का सहयोग रहा।

राष्ट्रोत्थान ब्लड बैंक की टीम ने रक्त संग्रह किया। तेयुप हुबली से अध्यक्ष विशाल बोहरा, पूर्वाध्यक्ष अरविंद कवाड़, कार्यकारिणी सदस्य संतोष बोहरा और विकास बोहरा उपस्थित थे। विशाल बोहरा ने सभी का आभार व्यक्त किया तथा टीम ने सभी का सम्मान किया।

संख्या, गुणवत्ता और ज्ञान का विकास...

(पृष्ठ १२ का शेष)

परमपूज्य आचार्य भिक्षु के पास कोई डिग्री नहीं थी पर उनका आगमों का ज्ञान, उनकी प्रज्ञा, मेधा, बेजोड़ थी। श्रीमद् जयाचार्य के राजस्थानी साहित्य का कोई मूल्यांकन करे तो उन्हें तो कितनी बार डॉक्टरेट मिल सकती है। गुरुदेव तुलसी का संस्कृत का ज्ञान, तत्त्वज्ञान, तेरापंथ के सिद्धांतों का ज्ञान, राग-रागिनियों का ज्ञान भी असीम था। आचार्य महाप्रज्ञ जी भी किसी कॉलेज में नहीं पढ़े पर उनकी विद्वता इतनी थी कि अनेकों विद्यालयों, विश्वविद्यालयों के अध्यापक-प्राध्यापक भी उनसे ज्ञान प्राप्त कर सकते थे। हम स्वाध्याय करते रहें, आगमों का स्वाध्याय करें, कंठस्थ करें, हमारे ज्ञान का विकास होता रहना चाहिए।

साध्वीवर्या सम्बुद्धयशा जी ने अपने उद्बोधन में कहा कि परमपूज्य आचार्य भिक्षु पथ सृष्टा थे जिन्होंने जिनवणी पर आधारित एक पंथ का निर्माण किया–तेरापंथ। उन्होंने अनुस्रोत को छोड़ प्रतिस्रोत में बढ़ने का साहस किया, उस साहस की परिणति है–तेरापंथ। तेरापंथ जिनशासन का अद्भुत धर्मसंघ है। यह वर्धमान है, प्राणवान है, प्रगति के शिखरों पर चढ़ रहा है और दूसरों के लिए पथदर्शक बन रहा है।

आज्ञा और अनुशासन ही जिनशासन का आधार है, इनके बिना संघ हड्डियों का ढाँचा मात्र कहलाता है। भगवान महावीर ने उत्तराध्ययन में कहा है कि बुराइयों और दोषों को दूर करने का एक उपाय है–अनुशासन। मर्यादा, व्यवस्था और आज्ञा तीनों मिलकर अनुशासन को अर्थ देते हैं, इनके बिना अनुशासन निष्प्राण बन जाता है। मर्यादाओं के साथ आचार्य भिक्षु ने तेरापंथ को वर्धमानता का आशीर्वाद प्रदान किया। तेरापंथ धर्मसंघ को एक से बढ़कर एक कुशल अनुशास्ता प्राप्त हो रहे हैं।

हम सबमें आचार निष्ठा वृद्धिंगत हो, हमारी विनम्रता बढ़े, सहिष्णुता बढ़े और हमारा समर्पण बढ़े। ये चारों गुण आत्मानुशासन को बढ़ाने वाले हैं। हम स्वयं का विकास करें और संघ का विकास भी करते रहें।

वर्धमान महोत्सव के उपलक्ष्य में समणीवृंद ने गीत का संगान किया। तेरापंथ सभा, डोंबीवली के अध्यक्ष गणपत हिंगड़ ने अपनी भावाभिव्यक्ति दी। तेरापंथ महिला मंडल एवं तेरापंथ समाज डोंबीवली ने गीत की प्रस्तुति दी। निशा नवीन इंटोदिया ने १३ की तपस्या का प्रत्याख्यान किया। तेरापंथ कन्या मंडल एवं तेरापंथ किशोर मंडल ने संयुक्त प्रस्तुति दी। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
5-11 फरवरी, 2024

✦ प्रथम कोटि के कार्यकर्ता निष्काम सेवा देने वाले होते हैं। नाम, ख्याति की आकांक्षा साधना की दृष्टि से भी बाधक है।

आचार्य श्री महाश्रमण

युगप्रधान आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी द्वारा संगरूर, पंजाब में हुई वर्धमान महोत्सव की स्थापना

संख्या, गुणवत्ता और ज्ञान का विकास होता रहे : आचार्यश्री महाश्रमण

डोंबीवली, २६ जनवरी, २०२४

तेरापंथ के महानायक, युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण जी ने त्रिदिवसीय वर्धमान महोत्सव के प्रथम दिन आगम वाणी का रसास्वाद करवाते हुए फरमाया कि वासुदेव ने अरिष्टनेमि के प्रति मंगलभावना व्यक्त की। वर्धमान बनो।

तीन शब्द मिलते हैं– वर्धमान, हीयमान और अवस्थित वर्धमान यानी बढ़ता हुआ, हीयमान यानी घटता हुआ और अवस्थित यानी न घटता हुआ, न बढ़ता हुआ। पिछले कई वर्षों से मर्यादा महोत्सव की पृष्ठभूमि के रूप में वर्धमान महोत्सव आयोजित हो रहा है।

वर्धमान महोत्सव के नाम को तीन रूपों में व्याख्यायित किया जा सकता है। पहला, जैन धर्म के २४वें तीर्थंकर का नाम वर्धमान है। अतः यह सहज ही भगवान महावीर के नाम से युक्त हो जाता है। वर्धमान का दूसरा अर्थ है–बढ़ता हुआ। मर्यादा महोत्सव से पहले के दिनों में गुरुकुलवास में चारित्रात्माओं की संख्या बढ़ जाती है, वर्धमान हो जाती है, तो यह संख्या वृद्धि के संदर्भ में वर्धमान महोत्सव हो जाता है। तीसरा संदर्भ है कि धर्मसंघ में साधु-साध्वियों, समणियों की संख्या बढ़े, श्रावक-श्राविकाओं की संख्या बढ़े और संख्या के साथ सबकी गुणवत्ता भी बढ़े।

सन् २००६ में संगरूर, पंजाब में आचार्य महाप्रज्ञ जी ने वर्धमान महोत्सव की स्थापना की थी। संख्या वृद्धि अच्छी बात है, गुणात्मक वर्धमानता बहुत बड़ी बात है। हम ज्ञान के क्षेत्र में विकास करने का प्रयास करें। हमारे धर्मसंघ में पीएचडी, एमबीए, सीए, सीएस आदि डिग्री धारी चारित्रात्माएँ हैं, कई इस दिशा में वर्धमान हैं। परंतु ज्ञान को बहुत अवकाश है। महाप्रज्ञ श्रुताराधना भी ज्ञान प्राप्ति का माध्यम है। अनेकों साधु-साध्वियाँ आगम कार्य, भिक्षु वाङ्मय आदि के कार्य में भी संलग्न हैं। मुनि महेंद्र कुमार जी स्वामी के पास कोई डिग्री तो नहीं थी, पर ज्ञान के क्षेत्र में विशिष्ट प्रतिभा संपन्न थे। तेरापंथ के इतिहास की अपूर्व घटना है कि दो साध्वियाँ वाईस चांसलन भी रही हुई हैं। समणियाँ भी जैन विश्व भारती एवं विदेशों में भी पढ़ाती हैं।

(शेष पृष्ठ ११ पर)

आचार्यश्री महाश्रमण : चित्रमय झलकियाँ

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के लिए मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक - **पंकज कुमार डागा** द्वारा मै. जी.के. फाइन आर्ट प्रेस, सी-1, एफआईएफ, पटपड़गंज, औद्योगिक क्षेत्र, दिल्ली-110092 से मुद्रित तथा 210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली - 110 002 से प्रकाशित। कार्यकारी संपादक : **दिनेश मरोठी**